

Station 4 (21/12/2011) 61.4/25.1/25.1,  
7. 42.1/25.1/25.1 d. 8. 42.1/25.1, 9. 42.1/25.1

1643 - 1215

✓ वि. पू. संस्कृत वि. पू. (1) शाखा ४८५३०  
① गो. पू. गो. वि. पू. २

Points noted

2. 2014-15-16

२ वा। निदा। २।

18/11/21 139  
18/11/21 8/11/21

5. शमाभरण आदेश काव्य  
शमाभरण आदेश काव्य

124 ✓ अष्टाशतत्तयं शतानां कालः  
वर्षानामेव नानाशतानां 34  
2

8. कालदास काल निर्धारण

3. 21-21-11 41-41-11

77 अ० १ वा० पृ० ५ जी० १५१ च० ५० अ० २०

188 (3) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

IV 3471 21.10.1971

10. आर्यः परित्यक्तः स्यात् ॥ २० ॥

7. माध्यम 4 र 5 का, माध्यम 6

8.2 V 2105-1: 4601100000 24

३. राय भूतः परिचाकृतः उत्तररामचरितं नाम भूतवाक्यम्

[illegible]

1917-18 52114

1630 3117-012147 02111011 3117

240124 240124 240124 36

18124224 24178, 37

1892-1893 1894-1895 1896-1897 1898-1899 1900-1901 1902-1903 1904-1905 1906-1907 1908-1909 1910-1911 1912-1913 1914-1915 1916-1917 1918-1919 1920-1921 1922-1923 1924-1925 1926-1927 1928-1929 1930-1931 1932-1933 1934-1935 1936-1937 1938-1939 1940-1941 1942-1943 1944-1945 1946-1947 1948-1949 1950-1951 1952-1953 1954-1955 1956-1957 1958-1959 1960-1961 1962-1963 1964-1965 1966-1967 1968-1969 1970-1971 1972-1973 1974-1975 1976-1977 1978-1979 1980-1981 1982-1983 1984-1985 1986-1987 1988-1989 1990-1991 1992-1993 1994-1995 1996-1997 1998-1999 2000-2001 2002-2003 2004-2005 2006-2007 2008-2009 2010-2011 2012-2013 2014-2015 2016-2017 2018-2019 2020-2021 2022-2023 2024-2025 2026-2027 2028-2029 2030-2031 2032-2033 2034-2035 2036-2037 2038-2039 2040-2041 2042-2043 2044-2045 2046-2047 2048-2049 2050-2051 2052-2053 2054-2055 2056-2057 2058-2059 2060-2061 2062-2063 2064-2065 2066-2067 2068-2069 2070-2071 2072-2073 2074-2075 2076-2077 2078-2079 2080-2081 2082-2083 2084-2085 2086-2087 2088-2089 2090-2091 2092-2093 2094-2095 2096-2097 2098-2099 2100-2101 2102-2103 2104-2105 2106-2107 2108-2109 2110-2111 2112-2113 2114-2115 2116-2117 2118-2119 2120-2121 2122-2123 2124-2125 2126-2127 2128-2129 2130-2131 2132-2133 2134-2135 2136-2137 2138-2139 2140-2141 2142-2143 2144-2145 2146-2147 2148-2149 2150-2151 2152-2153 2154-2155 2156-2157 2158-2159 2160-2161 2162-2163 2164-2165 2166-2167 2168-2169 2170-2171 2172-2173 2174-2175 2176-2177 2178-2179 2180-2181 2182-2183 2184-2185 2186-2187 2188-2189 2190-2191 2192-2193 2194-2195 2196-2197 2198-2199 2200-2201 2202-2203 2204-2205 2206-2207 2208-2209 2210-2211 2212-2213 2214-2215 2216-2217 2218-2219 2220-2221 2222-2223 2224-2225 2226-2227 2228-2229 2230-2231 2232-2233 2234-2235 2236-2237 2238-2239 2240-2241 2242-2243 2244-2245 2246-2247 2248-2249 2250-2251 2252-2253 2254-2255 2256-2257 2258-2259 2260-2261 2262-2263 2264-2265 2266-2267 2268-2269 2270-2271 2272-2273 2274-2275 2276-2277 2278-2279 2280-2281 2282-2283 2284-2285 2286-2287 2288-2289 2290-2291 2292-2293 2294-2295 2296-2297 2298-2299 2300-2301 2302-2303 2304-2305 2306-2307 2308-2309 2310-2311 2312-2313 2314-2315 2316-2317 2318-2319 2320-2321 2322-2323 2324-2325 2326-2327 2328-2329 2330-2331 2332-2333 2334-2335 2336-2337 2338-2339 2340-2341 2342-2343 2344-2345 2346-2347 2348-2349 2350-2351 2352-2353 2354-2355 2356-2357 2358-2359 2360-2361 2362-2363 2364-2365 2366-2367 2368-2369 2370-2371 2372-2373 2374-2375 2376-2377 2378-2379 2380-2381 2382-2383 2384-2385 2386-2387 2388-2389 2390-2391 2392-2393 2394-2395 2396-2397 2398-2399 2400-2401 2402-2403 2404-2405 2406-2407 2408-2409 2410-2411 2412-2413 2414-2415 2416-2417 2418-2419 2420-2421 2422-2423 2424-2425 2426-2427 2428-2429 2430-2431 2432-2433 2434-2435 2436-2437 2438-2439 2440-2441 2442-2443 2444-2445 2446-2447 2448-2449 2450-2451 2452-2453 2454-2455 2456-2457 2458-2459 2460-2461 2462-2463 2464-2465 2466-2467 2468-2469 2470-2471 2472-2473 2474-2475 2476-2477 2478-2479 2480-2481 2482-2483 2484-2485 2486-2487 2488-2489 2490-2491 2492-2493 2494-2495 2496-2497 2498-2499 2500-2501 2502-2503 2504-2505 2506-2507 2508-2509 2510-2511 2512-2513 2514-2515 2516-2517 2518-2519 2520-2521 2522-2523 2524-2525 2526-2527 2528-2529 2530-2531 2532-2533 2534-2535 2536-2537 2538-2539 2540-2541 2542-2543 2544-2545 2546-2547 2548-2549 2550-2551 2552-2553 2554-2555 2556-2557 2558-2559 2560-2561 2562-2563 2564-2565 2566-2567 2568-2569 2570-2571 2572-2573 2574-2575 2576-2577 2578-2579 2580-2581 2582-2583 2584-2585 2586-2587 2588-2589 2590-2591 2592-2593 2594-2595 2596-2597 2598-2599 2600-2601 2602-2603 2604-2605 2606-2607 2608-2609 2610-2611 2612-2613 2614-2615 2616-2617 2618-2619 2620-2621 2622-2623 2624-2625 2626-2627 2628-2629 2630-2631 2632-2633 2634-2635 2636-2637 2638-2639 2640-2641 2642-2643 2644-2645 2646-2647 2648-2649 2650-2651 2652-2653 2654-2655 2656-2657 2658-2659 2660-2661 2662-2663 2664-2665 2666-2667 2668-2669 2670-2671 2672-2673 2674-2675 2676-2677 2678-2679 2680-2681 2682-2683 2684-2685 2686-2687 2688-2689 2690-2691 2692-2693 2694-2695 2696-2697 2698-2699 2700-2701 2702-2703 2704-2705 2706-2707 2708-2709 2710

1845

4. 12. 27. 18. 20. 18.

11/2/2019

Handwritten text: 2011-07-21

[illegible]

Handwritten notes at the bottom of the page:

11-30-76  
C/S

0 16 20 45 210 31 2 4 4 12 4 4 1

A close-up photograph of a map fragment. It features a blue line that forms a rectangular boundary. Inside this boundary, there is a small, irregularly shaped area with a textured, brownish appearance, possibly representing a specific geographical feature or a label. The background of the map is a light, mottled grey.



संस्कृतं द्विविधम् अस्माकम् एतद्वै आचार्यः, लौकिकं  
 ४१ संस्कृतं लौकिकं संस्कृतम् च

प्र०। संस्कृत - लाहिर्यस्य महत्वं प्रतिपादयति ?  
 उत्तरम्। संस्कृतं अतदर्थं व्युत्पत्तिः सम् अर्थात् संस्कार-  
 पूर्वक - एकं चोक्तम्। अस्मात् अस्मात् आदि काऽपि सति  
 सर्वथा शुद्धता, संस्कृतं न केवलमादि कालस्य अपितु  
 अनदि कालस्थिति। ~~यदि संस्कृतं लौकिकं संस्कृतम्~~  
~~न कश्चित् यदा विरजं संस्कृतं पुस्तकाणां, पुस्तकाणां~~  
 भाषा। अतः प्रायः आसीत्। तदा संस्कृतं आर्योक्तं  
 आर्योक्तं संस्कृतं पूर्णतया आत्मनिर्भरं आसीत्।  
 पाश्चात्य विद्वद्भिः अपि अधुना इदं तथैव स्वीकृतम्।  
 यत् यदा लैटिनादयः भाषाः स्वस्वमेव जन्मकाले एव  
 आगत्य तदा एव संस्कृतं भाषा यौवनं परिपूर्णं लोका-  
 सम्पन्ना च आसीत्, देवानामुच्यते देववाणी आत्मा  
 देशस्थ अनुपमा अमूल्या च निश्चयं नत।  
 अधुनापि इमे आर्याणां हृदये शोभायाम् अलम्बयन्ति  
 करोति। अतिप्राचीनं चारणां संस्कृतं लोका-  
 न्वसितं यत् मानवजीवनस्य जीवनात् दूरमिव भाषा-  
 अनुपमकं अतः प्रायः चारित। एतस्य मतस्य  
 निमित्तं जन्म अस्मात् तदा च आर्योक्तं संस्कृतं  
 सर्वथा अनाभिस्य, एव लीनं। कम चर्मस्य इयं  
 भाषा न केवलं भारत अपितु अमेरिका जर्मनी  
 इंग्लंडादिषु समृद्धेषु जलमाने पश्यते पाठ्यते च  
 नैदानां कृतिः स्मृतिः ग्रन्थानां देशानां तत्र मन्त्राणां  
 चतुर्दश विद्वानां गणकं आलम्बयन्ति कालान्तरकादीनां  
 मध्यपद्यादीनामपि भाषा अस्मादि-चर्यापि उपेक्षणीया  
 चारित।



१. व्युत्पत्तिः

२. तत्त्वमृतप्रथाया - १. विदेषु अपि पठ्यते पाठ्यते  
२. हिमाचले दक्षिणे च

३. प्राचीनता + धार्मिकता

४. सांस्कृतिकता - विदेषु अपि पठ्यते पाठ्यते ३. व्युत्पत्तिः

२.२. हिमाचल दक्षिण भारत अनेकेषु ग्रामेषु  
नगरेषु च व्यवहार भाषा सिंह गङ्गा महा भारत काल हिमाचल जनभाषा सिंह  
लङ्का भारत वारे काम सिंह सिंह सिंह  
पवन पुत्र वारे काम सिंह सिंह सिंह

कल्या

माध्यम

३.२. हिमाचल अनेकेषु ग्रामेषु नगरेषु च व्यवहार भाषा सिंह गङ्गा महा भारत काल हिमाचल जनभाषा सिंह  
लङ्का भारत वारे काम सिंह सिंह सिंह  
पवन पुत्र वारे काम सिंह सिंह सिंह

३.२

४. हिमाचल अनेकेषु ग्रामेषु नगरेषु च व्यवहार भाषा सिंह गङ्गा महा भारत काल हिमाचल जनभाषा सिंह  
लङ्का भारत वारे काम सिंह सिंह सिंह  
पवन पुत्र वारे काम सिंह सिंह सिंह

आप्ला

५. हिमाचल अनेकेषु ग्रामेषु नगरेषु च व्यवहार भाषा सिंह गङ्गा महा भारत काल हिमाचल जनभाषा सिंह  
लङ्का भारत वारे काम सिंह सिंह सिंह  
पवन पुत्र वारे काम सिंह सिंह सिंह



5. साहित्यकाराः विश्वप्रसिद्धाः ।

6. पाश्चात्यैः अनुपमासन्धानम् - पुरासा च

7. वेदाङ्ग - वैदिककालस्थानम् । दर्शनबुद्ध्यावधारिकशास्त्राणि ।

8. रामायणं, महाभारतं (पूर्व) साहित्यस्य सिद्धदर्शनम् ।

9. उपसंहारः कालिदास, कीर्ति, विश्वामल, कथा नीति ह्येतान्महर्षयः ।

काऽपि विद्या अनर्थः अपारिणत्यं नास्ति, विभिन्न-

क्षेत्रेषु कस्याः भाषायाः व्यापकता लज्जीवता प्राचीनता

हस्तात । व्याकरणं ह्यप्यग्रा यथा इयं भाषा यावती

विशुद्धारितं तावती न निश्चयतः अभावाऽपि

भाषा । अल्पाः भाषायाः उच्चारणं मात्रम् ।

शुद्धशुद्धाणां साने तत्कालमेव भवति । माहेश्वरणाः

उच्चारणं तादृशं पठनं पाठनं लेखनञ्च वैज्ञानिक

हस्तया अपि इयं भाषा अत्युत्तमास्ति ।

साधुनिष्कृष्टगुणाय कम्प्युटर् यन्त्रेण प्रयोगाय इयं भाषा लक्ष्मण-यवहारिकी तथा न्य अर्धपूर्णा अस्ति ।

5. अल्पाः भाषायाः वैज्ञानिकव्यापकताः

महाकाव्यकाराः कालिदासहर्षादयः काव्यनारककाराः

काव्यमहाकाव्यः ललितगद्यकाराः न केवलं भारतं अपितु

समस्तविश्वे सम्माननीया आदरणीयाः अनुकरणयोग्या

अस्मिन् सन्ति, अभिव्यन्ति च ।

6. संस्कृत भाषा व्याख्यायुगेन नीतिगत इत्येकं प्रमाणं न केवलं मानसिकं आदिकं अपितु हार्दिकं

अस्ति । विश्वव्याप्येन विद्वत्सु अग्रावृत्तं

संस्कृत भाषायाः पठनं - पाठनं न्य अन्वेषणसंधानं

हस्तवन्तः । अल्पाः भाषायाः प्रवाहेन व्यापिता भूत्वा

ते अत्रत्याः हव लज्जिताः । अल्पाः भाषायाः

कानुपायं गौरवं महत्त्वं न्य अन्वेषणं व्याप्य जर्मन

कवि विद्वत्सु महाभागः लक्ष्मणे विश्वप्रसिद्ध

ग्रन्थे कथितवान् ।



If we want to know something about  
our old history and culture and  
humanity. we must go to India. Where  
the oldest history and culture of  
mankind preserved.

यदा उभारतीमाः अपि  
तद्यं ह्युपान्त इमां भाषां, तदि कथं न भारतीमाः!  
काशेत्यापि कश्चित् यत् उभयो भाषायां विद्यते  
तदन्वयापि उपलब्धुं शक्यते परन्तु यत् अस्यां  
भाषायां नास्ति तस्य अन्यत्र अन्यथा केवलं  
संगमशीलिका एव ।

१. संप्रदायमात्रेण लोभितं संस्कृत भाषायाः  
वैभवं दृष्ट्वा भाषा, अस्माकं वैसाः प्राचीन भारतवर्षात्  
विभक्तयोः लीति । यदिक-सम्भवाकाले मानवीय  
सम्भवा बहुधा भाषात् तत्-वर्षं यदिक  
ग्रन्थानां भाषाभेद एव जातु शक्युमः एते सर्वे  
यदाः संस्कृत भाषायामेव लीति । यदानीं  
भाषायां ग्रन्थः प्रथमः-याः आरम्भक-ग्रन्थः-यः  
आम्नाभाषायापि लुप्तः लीति । अस्माकं  
इयं भाषा दृष्टेन साहित्येऽपि दृष्टत । अस्माकं  
षड्दर्शनानि । जैव दर्शनं, गौतम दर्शनं, बौद्ध दर्शनं  
आपि संस्कृत भाषायामेव लिखितं सन्ति ।  
चतुर्दशविधा, लघुविज्ञानशास्त्राणि, अथ  
शास्त्राणि न्यायशास्त्राणि न्य अस्माकं

पृष्ठ

उत्तर



आपथामेव लिखिताः सन्ति । चतुर्दश विद्यासु विभिन्ना  
विद्या तथा च काव्यैर्दत्तं ग्रन्थाः अन्त्यामेव आपथामे  
विश्रुयिताः सन्ति । इति किञ्च लोकोक्तं आदि काव्ये  
समाप्तौ लोकोक्तं स्य नीतिम् अस्ति, विस्तृतं महाभारत  
लोकोक्तं स्यैव सन्तः । निश्चिन्तः

कः न जानाति कालदानं विश्वं प्राप्नुयः कवि-  
कालदानः अनेकं काव्यनाटकानां सन्तः अन्त्यामेव  
आपथामेव लिखिताः सन्ति । आकुन्तलस्य महत्त्वं दृष्ट्वा  
जर्मन कविः ग्रेट् महाभागः इदं दूषितवान्  
इति स्यैव आदि वाचस्पत्ये प्रियं लिख्यं आकुन्तलं  
सन्तः ।

राजा नीतिं लोकोक्तं सन्तः किरावाजिनीम्  
विश्रुयतां लोकोक्तं सन्तः सन्तः सन्तः । सर्वं लिख्यं  
कविद्वारा लिखिताः कथाः ग्रन्थाः नीति ग्रन्थाः सन्तः  
कापि अन्त्यामेव आपथामेव लिखिताः सन्ति । किं कथयामः  
एतद् सन्तः तु उदाहरणं मात्रम् ।

अहमापि तेषु महाभागेषु लोकोक्तिम् अः लोकोक्तिम्  
लोकोक्तिम् लोकोक्तिम् उदाहरणं तर्तुं प्रयत्नशीलोऽस्मि ।

पृष्ठे

समाप्तौ लोकोक्तिम् आदि काव्यत्वं निर्व्याप्यम् अथवा समाप्तौ  
लोकोक्तिम् लोकोक्तिम् आदि काव्यमास्ति इति स्वतः स्यैव

विश्रुयताम्

उत्तरम् : अस्माकं लोकोक्तिम् नीतिक लोकोक्तिम् लोकोक्तिम् लोकोक्तिम्  
इति लोकोक्तिम् आगमाः विग्रहमास्ति । लोकोक्तिम् लोकोक्तिम्



1. भूमिका - ४॥

2. तर्क - बाह्य (मध्येश्वराय पाठ्य विषये आचार, आभ्यास)

3. उपसंहार

## रामायण

1. एकमात्राय रचयिता आरित । अन्य कार्य लौकिक
2. संस्कृतम् आदि कार्य तथा च अन्य आदि कार्य इति
3. अपेक्षा प्रसिद्धि प्राप्नोति । महाभारतमपि रामायणमिव
4. प्राचीनकालमरित कदाचित्तु तु इयं शान्तिः उत्पन्ना
5. भवति यत् आदि कार्य रामायणमरित अभवा
6. महाभारते परन्तु एक एव ~~वर्णन~~ अस्माः लभन्त्यापः
7. लभन्त्यापः भवति यत् ~~विदित~~ रामायणे कुत्रापि महाभारतस्य
8. पात्राणां च उत्पत्तिः नास्ति परन्तु महाभारतस्य
9. ज्ञानिपर्वणे रामापाख्यानमिति नाम्ना उल्लेखोऽस्ति
10. तस्मिन् रामजीवनस्य संक्षिप्तः परिचयोऽस्ति ।
11. ~~अनेकप्रकारैः~~ रामायणस्य लौकिक-आदि कार्यस्य
12. सिद्धिं भवति । रामायणे अनेके प्रयोगाः स्वरूपाः सन्ति
13. येषां प्राणेना व्याकरणद्वारा पूर्णतया लभन्त्यापः
14. नास्ति । ~~वाल्मीकिः~~ लघुप्रथम लौकिक-संस्कृत
15. काव्यरचनामकरात् । अतः अन्य लौकिक लालित्य
16. आदि कार्यः आरित । वाल्मीकिरामायणे अनेकप्रकारैः
17. लघुप्रथम महत्त्वं प्रतिपादयति । अथ आचारः
18. प्रकारः लघुप्रथम परमितमिति । ~~सप्त~~ सप्तकार्येषु
19. शान्त रामायणे रामजीवनस्य विशेषरूपेण वर्णनमस्ति ।
20. रामायणस्य लभन्त्यापः कथा व्यवहारः परमन्तमेव
21. लभन्त्या भवति आन्तिककार्यं मयापि प्रसङ्गानुसृतमेव
22. लभति परन्तु मुख्यतया अरिभन् शस्त्रानामुत्पत्तिः
23. रामायणे लह वन्द्यं मुख्यं तथा च इनुमता गोपन-
24. काव्यस्य वर्णनमिति वर्णनमस्ति । परन्तु मुख्य



कथानकेन सह एतेषां प्रसङ्गानां कोऽपि सम्बन्धो नास्ति  
अतः अल्पा काण्डस्य सम्बन्धो इदमेव बहुमतमस्ति मत  
इदं कल्पयितुं अल्पस्य नास्ति अथवा परवर्तिनि  
काले एते प्रसङ्गाः रामाभरणे लभ्यमानाः सन्ति।

4. कालिदासावधयः कनैके कव्यकाराः अभवां नाटककाराः  
अभवन् एषां रचयितानां कथानकानां मूलत्राता वात्मानि  
रामाभरणेन आरम्भे कालिदासेन तु स्वकीये महाकाव्ये  
रघुवंशे (पूर्व सूक्तिः) इति शब्दस्य सम्मानपूर्वक  
उल्लेखः कृतमस्ति। 5. रामाभरणस्य प्राचीनता अनेन  
कारणनापि सिद्धमस्ति मतं यौद्ध ग्रन्थेषु तु अल्प  
रामाभरणस्य उल्लेखो मिलति। एते ग्रन्थाः रामाभरणस्य  
प्रचारेण प्रभाविताः सन्ति। 6. ग्रीक साहित्यमपि रामाभरणद्वारा  
प्रभावितमेव लभ्यते। 7. अनेके निदासाः रामाभरणस्य कालं  
इति शतः वर्षे पूर्वम् (इ. स. ६५०) इति स्वीकुर्वन्ति।  
पारस्यकाः निदासाः [मा कोऽपि] विंशतिजं तथा च  
मैकडोनिल अपि रामाभरणस्य कालं स्वीकुर्वन्ति।

व्याख्यानिक → 1. पारलिपुत्र नामकस्य व्यापका विष्णु लवत्तरात्  
पञ्चशत वर्षपूर्वम् अगद्यैकशतम् वर्षात् आजाद शत्रु दार  
अभवत्। यद्यपि वनवासस्य जीवनं अगणान्वयम्  
शौनन्दस्य गंगायाः च संगमिन् गच्छति। परन्तु रामाभरण  
कुत्रापि पारलिपुत्रस्य उल्लेखो नास्ति। 2. रामाभरण  
मिथिला तथा च विशाल इति द्वयोः स्वतन्त्रा  
राज्यानि सन्ति। उल्लेखोऽस्ति द्विषाह् साहित्ये आध्यात्म  
नगरस्य इति लभ्यते इति शब्दस्य अपि उल्लेखोऽस्ति।  
साकेत



परन्तु रामायणे कुत्रापि सकेतस्य उल्लेखः नास्ति ।  
 प्रथमं शताब्दमामरेणैव वासिष्ठे रामायणस्य  
 उल्लेखः कृतोऽस्ति । किं रामायणे दक्षिण भारतस्य अपि  
 सप्तयत्सनागालस्य उल्लेखोऽस्ति । दक्षिण भारते अपि -  
 लम्पतामाः या अगल्या आसीत् - तस्य लम्पकस्य  
 नाम प्राच्यम् । परन्तु अपि लम्पतास्य लम्पकस्य उल्लेखः नास्ति । अतः अनेनापि इदं सिद्धं भवति  
 यत् अपि लम्पतामाः प्रभारत - पूर्वस्य रचनाऽस्ति  
 रामायणम् । रामायणस्य अध्ययनात् इदमपि  
 स्पष्टमस्ति यत् अस्माकं देशः तदा न अनेकेषु  
 लघु ग्रन्थेषु विभक्तो आसीत् - परन्तु महाभारते  
 विशालिनां राजधानीमुल्लेखोऽस्ति । अतः रामायणे  
 केवलं द्वयोः पद्ययोः अथवा राजधानीमुल्लेखोऽस्ति परन्तु  
 इतो अनेके परिचिते इति आशङ्क्ये महाभारत  
 लोकरात् । अतः एतः प्रमाणः इदं सिद्धं भवति  
 यत् रामायणे कदा लिख्यतात् पूर्वकालस्य रचनाऽस्ति  
 अनेकानि प्रमाणानि सन्ति येषामधारेण व्यभिच  
 रमासीत् शिवभूषणं यत् लौकिक लोचनस्य  
 रामायणमादि महाकल्पं तथा च वाल्मीकिः आदिकविः



1. भूषिका  
2. अष्टय - श्लोक (3)  
3. उपसंहार

97  
403

भूषिका

2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
(1)

रामायण आदर्शकाव्यमिति प्रतीयते (या)  
रामायण आदर्शानां गण्डारः इति उदाहरणानां  
माध्यमेन लप्यते स्मियताम् ।  
रामायणं मानवजीवनस्य ग्राह्यभूतः प्र-गोदित, रामायणे  
वाल्मीकि-॥ एतादृशाः अनेके भागाः प्रदर्शिताः सन्ति येषु  
गोमय-वालेन मानवजातिः अनन्तकालपर्यन्तं (एव जीवनस्य)  
उद्धारं करिष्यते । लक्षण-प्रकाराः अनेके आन्विष्य  
दोषयन्ति यत् अन्तर्भाक् चरितं रामवत् स्यात्, न तु  
शिववत् । रामजीवनस्य (चरितस्य) लक्षणं एव  
तेजसाचार्याणां मुख्याद्ग्रह्यमानम् । रामायणे यत्र मानव-  
जीवनस्य वास्तविकतां लप्यते उचित-अनुचित-व  
लोकात् स्वर्गात् कुमा-यं ज्ञापयति तत्र वाल्मीकि-जीवनस्य  
उद्धाराय अन्तर्भाक् लभ्यते अनेकान् आदर्शान् उपस्थापयति  
आदर्शपुरुषो रामः इदं कथनं लिख्यतामेव । परन्तु यत्र  
रामायणजीवने आदर्शानामाद्यवयव नन्ति तत्र अन्येषु  
पात्रेष्वपि आदर्शस्य प्रतिबिम्बं लब्धं दृश्यते । यत्र  
लक्ष्मणेन कतिपयानां आदर्शानां भुल्लेखमत्र कुर्मः ।  
(1) आदर्शराजाः :-

देशरथस्य राजस्य-व जीवनमादर्शं रूपं रूपेण  
प्रतिदृग्गच्छति । यदा केकेमनरप्लवङ्गं तपदशरथस्य विधायिका  
स्थितिरासीत् । एकत्र पुत्रमोहः अन्धत्र राजपरम्परायाः  
परिपालनम् । देशरथेन मोहं परित्यज्य राजा धर्मस्य  
परिपालनं कृतम् । नीलाध्याग प्रसङ्गोऽपि रामेणापि  
अस्मैवादर्शस्य परिचयः दत्तः । राजकल्य कथनेन तेन



# राजापुत्रे मित्रिदेवैर्भ्रातात्वेण

दशरथशेखर

रामभक्त

रामलक्ष्मण

राम

लक्ष्मण

राम

लक्ष्मण

राम

लक्ष्मण

राम

११

सीता

परिचयः । न चित्तं तस्याः लब्धत्वा किञ्चित् ।  
प्रजापतिं पालनं पितृवत् । राजा रक्षणे तयोः कर्म ।  
तयोः जीवनं उद्दिश्यमानं । प्रजापालकस्य ।  
च पाल्य कामाक्षीः ।

आदर्शपुत्रः :-

रामस्य भक्तस्य च जीवनं आदर्शपुत्रस्य अस्ति ।  
रागः पितुः कामाक्षीं पालयति भरतः त्वया ल्यानऽपि निवर्तते ।  
आचरति ।

आदर्शपतिः :-

रामस्य लक्ष्मणस्य च जीवनं आदर्शपतिः उदाहरणमस्ति ।  
द्वयोः पत्न्योः जीवनं अपि आदर्शस्य निदर्शनमस्ति ।

आदर्शमित्रः :-

रागहनुमताः रामस्य भ्राताः । रामस्य भ्रातृवत् ।  
पारंगतं मित्रं आदर्शस्य उदाहरणमस्ति । दुःखापि लोभास्य  
दोषाणां च भवति ।

आदर्शदेवरः :-

लक्ष्मणः सीतां मातृवत् जानाति सीतायाः आभूषणानि ।  
पतिः लक्ष्मणस्य इदं कथनं आदर्शस्य चरममस्ति ।  
केयूरे नैव जानाति न जानाति च कुतश्च ।  
नूपुरं नूपुरं एव जानाति नित्यं पादाङ्गो बन्धनात् ।

आदर्शभ्राताः :-

रामं प्राति लक्ष्मणः भ्रातृणां लोकां अनुपमं अस्ति ।  
तदा मेघनादस्य प्रहारद्वारा लक्ष्मणः मूर्च्छितः जातः तदा  
लक्ष्मणस्य दशमवलिभ्यः रामस्य इदं कथनं आदर्शस्य



प्रक/५४ अस्ति -

देशे - २ कलजाणि देशे - २ च लान्धवः  
तन्तु देशे न पञ्चमाणि यत्र श्रुता लहादरः ।

७

त्यागस्यादशः

समस्तं जीवनं त्यागल्य श्रुतिः अस्ति । यदा वानरसेना  
लङ्कागजमतं तदा लङ्कायाः विपुलं वैभवं दृष्ट्वा लङ्कागजम्  
गनाले इयं दारणा आसीत् यत् लङ्काशयल्यापि विलम्बः  
कामादृशा राज्ञे कथञ्चिद् गवद् इयं केवलं लङ्कागजम्  
आगमिकी दारणा आसीत् । रागं लङ्कागजम् गान् दत्त्वा  
अवदत् - अष्टे लवणमिमीलंका न न लङ्काया रोचते  
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।  
रामस्य अनुरागः जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गे न्व प्रीति आसीत् ।  
एते लान्ति लङ्कापत अपुत्रं रामायणल्य आदेशः  
अदि वयं एतेषु आदेशेषु लङ्कापि स्वजीवने दारणागह  
तेनैव कालमात्रं जीवनल्य लम्पलता निश्चिन्ता वर्तते ।

प्रका

उत्तर

असिका

कालिदासल्य ज्ञान निवारणं तन्काणा गार्हग्येन क्रियताम् ३  
लङ्कत लोहिते यदा कदापि लङ्कत लोहितल्य  
श्री ५६ कालावदाराणां गणनां अवाते तदा लवप्रथमे कालिदास्यैव  
गारा आपात्रि कथितमस्ति -  
पुराकाले न गणना पुरातु कालविश्रुता कालिदासः  
अन्यापि लङ्कल्यैव रमावात् अनामिका साथवात् अत्र  
कालिदासः कालानां नारकानां आरकाणानां च  
गार्हग्येन लङ्कत-लोहितल्य अष्टारमभूषमतं । परन्तु खेदाय



1. प्रथम 1. कालिकायाम् साहित्यम् रचनाम्

151

2. कालिकायाम्

3. प्रथम रचनाम्

2. कालिकायाम् प्रथम रचनाम् - अलङ्कारम्

3. रचना विषयम्

4. उपर्युक्तम् अर्थः विषयः यत् अर्थः गद्यान्तः कविः कदा कुरु - आशु -

श्रुतिः ~~कालिकायाम्~~ अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अनु लक्षणम् (न्यु) विषयः

कालिकायाम् कविः रचनाम् कालिकायाम् निवारणम् अर्थः

कालिकायाम् आधारः कियते अर्थः अन्तर्गतम्

प्रमाणानि द्वितीयम्, कालिकायाम् प्रमाणानि / अन्तर्गतम्

प्रमाणानि तन्मयम् कविः ग्रन्थम् अलङ्कारम्

प्रमाणानि तन्मयम् परवर्तमानम् रचनाकारणम् रचना-निवारणम्

कालिकायाम् अर्थः कालिकायाम् अर्थः अर्थः

अर्थः

(1) कालिकायाम् अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः (2) अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः

अर्थः अर्थः अर्थः अर्थः



तदनुसारं द्वितीयशताब्दीतः सप्तशताब्दीपर्यन्तं कालिदासस्य  
 कालः अनुगोयते परन्तु एतद् केवलमनुमानमात्रमाह  
 गारतल्य कतिपयाः विचारकाः विक्रमादित्यसम्बन्धं  
 चन्द्रगुप्तद्वितीयस्य महाराजस्य कालिदानं ग्रहणाय  
 परवर्तते इति स्वीकरोति । एतत् कुर्वन्ति त्रुतिपथाः  
 निश्चिन्तः कालिदानं यशोवन्तानां राजकाण्ड इति लिख्य  
 कृत्वा षष्ठशताब्दी इति तस्य कालं स्वीकुर्वन्ति परन्तु  
 मतभेदः इदानीं प्राप्नुमः । भारतभानी तथा च  
 ॥२॥ वात्सल्यमनकषाभालाचक्रनाट्यं मतमाहति गतं  
 कालिदासः प्रथमशताब्द्यामासीत् । अकानो विज्ञेता  
 कोर विक्रमादित्य एव कालिदासमाश्रयदाताहति । अस्तु तथा  
 व्याकरणस्य प्रयोगश्च यथा विभिन्न-स्थलेषु विभिन्नानां  
 शतकानां प्रयोगेण इदमेव लिख्य गवाति गतं कालिदानं  
 प्रथमशताब्द्यामासीत् । अतएव मतस्य इदानीं बहुल्येन  
 समर्थनं क्रियते ।

स्थान-निर्धारणम् :-

सादृशी लभन्त्या कालिदासस्य काल  
 सादृश्येऽस्ति सादृशी स्थानसम्बन्धेऽपि नतम् । कालिदासस्य  
 ग्रन्थेषु नास्ति नगालिकन कालिदासस्य लक्षणे  
 मत्तमतिदेवति गतं कालिदासः कालिदेवः अन्तर्गतः  
 कालीत् । तस्मात् एव नरदानस्य तस्मिन् ग्रन्थेऽपि गतं  
 पाण्डित्यं चारवाततं ज्ञातम् । तां देवीं प्राप्तं करप  
 कालिदासः स्वग्रन्थेषु अनक-स्थलेषु नतं मत्तकाऽस्ति  
 कालेन प्रसङ्गं विचारकाणां मतं गतं कालिदासः



कदा प्रान्तस्थानीतु तन त्व प्रन्थेषु उज्जयिनी-  
नगरां प्रति आप विविध आग्रहः प्रदर्शितः ।  
उज्जयिनी नगरस्य विपुल वैभवस्य वर्णनं तस्य  
ग्रन्थेषु अन्ये स्मरणे मिलति । तस्य ग्रन्थेषु  
पुष्पां रूपेण आदि उल्लेखेषु अंगवतः शिवस्य  
लोदरस्य नगरमस्ति । कुमारसम्भवे शिवस्य  
अनुपमा दृष्टा अस्ति दर्शनीयम् । अनेन प्रान्त-  
कालिदासः इदं कथ्यन्ते मतः कालिदासः

कश्मीर प्रान्तस्थानीतः

३. कालिदासस्य निर्वाणु रत्नानां शाकुन्तलस्य  
सर्वोत्तमं स्मरणमस्ति अन्येषां नाटकस्य भावमनेन  
आहुतं नाटककारेण शैवलीपिथर गद्यरथेन सह  
जनाः कालिदासस्य तुलनां कुर्वन्ति । तस्य  
नाटकस्य आद्याय तस्यां (मालती मध्या) कण्वाक्षमस्य  
न्या वर्णनं पिण्डत देवदत्त शर्मा शास्त्री इदं  
कालिकः प्रमाणः उदघोषयति मतः कालिदासः  
गुह्यदेशीय (गुह्यवाक्य मण्डलस्य) कालितः परन्तु

उपसिद्धः कालिदासः लभ्यते विपुल-भाष्येन न जातम् ।  
आतः कालिदासः मध्य कल्पे प्रान्तस्थानीतः  
वस्तुतः नः भारतीयः कालितः विश्वे भारतीय  
कावे रूपेण अयं प्रसिद्धोऽस्ति ।



प्र०५ कालिदासस्य ग्रन्थानां संक्षेपेण परिचयः देयः ?

उत्तर :- कालिदासः विपुल प्रतिभायाः दानी कालीत् । नः

काल्याः अन्तःस्थाया नरस्वल्पाः पुत्राः ~~दृष्टा~~ <sup>दृष्टा</sup>सीत् ।

तत्र स्वजीवने कोनकाशः रम्यनाभिः निष्कृत नाहेत्ये  
मीडितम् । यदापि अन्ये ग्रन्थाः कालिदासस्य नाम्ना  
प्राणिताः सन्ति परन्तु निवाररूपेण निम्न लिखिताः  
एव तस्य रचनाः सन्ति ।

(१०) रघुवंशम् , कुमारलम्भम् च एते द्वे महाकाव्ये  
सन्ति ।

त्रितु लोहार तथा च मेघदूत - एतद् द्वे खण्डकाव्यमस्ति,  
आनन्दशान्त-शाकुन्तलमालवीकारिनामेतौ विक्रमादित्यौ -  
इति सन्ति तस्य त्रीणि नाटकाणि , एवं च लक्ष्मीपतः  
परिचयः ~~इत्येवमस्ति~~ इत्येवमस्ति ।

रघुवंशम् :-

नाल्लोकाः समाधत्तौ वीरता कथामधिकृत्य

इदं महाकाव्यं संचितमस्ति । अनुपुत्रः दिलीपादारभ्य लव-  
पुत्रः आग्निवर्षा परान्तमनेकेषां दूर्ध्वपुत्राणां तथा चानु-  
वर्षाणां । महाकाव्ये महकाव्यमस्ति (वक्ष्यते) ।

ततः पूर्वाः आदिमन् महाकाव्ये विश्वमानाः सन्ति ।

वीर रत्नः अस्मि महाकाव्यास्य मुख्यरत्नः । रघुवंशस्य

सम्बन्धे एका इयमेव विचारधारा वर्तते यत्

अस्य महाकाव्यास्य पञ्चाङ्गशास्त्रे लगीर आसन परन्तु

इत्येतत्तत्र देवस्य तथा च मालिनास्य टीका केवलं

एकोनविंशति सर्ग पर्यन्तमस्ति तेषु ~~विषय~~ <sup>विषय</sup> प्रथम-चतुर्षु



- 12 रामायणं पूनजानां यथा दिलीपस्य अनिल्य रक्षोः तथा च  
 13 दशरथस्य वीरनमानि । दशममर्गस्य पञ्चदशमं  
 14 तस्यैव रामायणं चारुतं विस्तृतं रूपेण वर्णितमस्ति ।  
 15 आतङ्गस्य चत्वारः सर्गाः रामायणं वंशजानां वर्णनं  
 16 कालिदासः विनित । काव्यमर्यादं ह्येषा इदं महाकाव्यम्  
 17 निर्विवादं रूपेण अस्मिन्मन्दनोपा रचयितास्ति ।  
 18 लम्पूणं महाकाव्यं काव्यकालिदासस्य विस्तृतं काव्यं  
 19 कौशलं पद-2 दृष्टि गौचरं भवति । आरम्भे दिलीपस्य  
 20 पुत्राद्विजायाः तपोमार्गं जीवनं हृदयेतं विनितः - 2 द्रुप  
 21 वंशस्य वीररूपाणां स्मरणस्य तपस्याभावेन वर्णनं  
 22 उद्घाटितं भवति । अन्त्योन्त्ये अस्मिन् वर्णनस्य  
 23 निष्पन्नं तथा च तस्य जीवनस्य देखनीयभवनानामपि  
 24 काव्यस्य चामत्कारमेव दर्शयति कथायां स्वाभाविकः  
 25 यथावदस्ति निर्विवादं रूपेण अस्मिन् अन्त्योन्त्ये कालिदासस्य  
 26 अनुपमा रचयितास्ति ।

### कुमारसम्भवम् :-

कालिदासस्य द्वारा विरचितं महं कवि-कृतं  
 महाकाव्यम् । कालिदासस्य लेखनाद्वारा प्रसृतमस्ति  
 शिव-भावस्य भावपूर्णं काव्यं । काव्यकथायां च जनि  
 यावत् काव्यं कथा नाम्ना कालिदासस्य यथापि लक्ष्यं  
 निर्गम्य रचितं महं महाकाव्यमुपलभ्यते परन्तु  
 टीका केवलम् । अत्र सगं यथेष्टमेव कालिदासस्य  
 कविता इति चेत् । इयमापि विवदन्ति अस्ति यत्







- |                |                        |
|----------------|------------------------|
| १. मधुमहाशय    | ५. मालविकाग्निमित्रम्  |
| २. कुमारसंभवम् | ६. विक्रमोर्वशीयम्     |
| ३. मेघदूतम्    | ७. अश्वत्थामशाकुन्तलम् |
| ४. रघुवंशम्    |                        |

नारित लम्पता / इयं रचना कालिदास-य तारुण्ये  
 प्रभासोऽस्ति / विवाहे-न नवतूष्णीं एकत्र लागे पागे वगैरे  
 कालिदास उपलब्धता भवति । कालिदासः संहृत्य वाग्भाविकस्य  
 मेघमल्लनाम प्रदर्शनं कर्तते । लम्पति कवित्वं येषु -  
 युववयोः पात पल्लवोः मेघमल्लनाम लह विवाहे-न नवतूष्णीं  
 पारवत-नाम नाम उजा-य हृद्यते । इयं लम्पताप-न  
 दिवसः चारुताः पर-तु राजा च-र-सा-द्विका आन-दक्षमिणी  
 यदा च-युमा दिव्यात भूम्या च नवीनता प्रक्षिपति प्रभा-  
 युगलस्य इवम शाकानुलः चन्द्रमा तिरोहति वर्षाकालः  
 नृपपत आभाति हन्ती रूपेषु मेघेषु न आरादाति  
 चपलता लक्ष्य तेषां पताका पराशिखराणां युग्मनाय  
 मेघानीमेषां लता, हेम-त-य शिथिलता, प्रभा युगलानां  
 कालिदास-आधिक्यतामानयति । शिशिरता रज-मा  
 शीताधिक्यं च-युकिरो देहकम्पनं प्रभा जना-नां  
 कक्षाणां शिवाङ्गानां मुद्रा उवा वल्लेषु च उज्ज्वलता  
 कानुगवः इत्यादयः प्रलङ्गाः दर्शनीयाः लोन्त ।  
 शब्द वि-यातः गाथाप्रवाहः लवित्र लज्जलता युक्ता दृश्यते ।

३. मेघदूतम् ÷  
 मेघदूत नामानुसारं इयं रचना मेघदूतमिति  
 मत्वा रचित इति । इयं रचना पूर्व मेघ उत मेघा-  
 इति द्वयोः मेघयोः आद्यभागे संकलित इति । कुल्लेख-  
 गाथेन अलकापुरितः निष्काशितः यक्ष हिमालयात् दूर-  
 नीलगिरि आगतं वसति । आलोक मानस्य प्रथमे दिने  
 यदा सागरात् मेघ उद्गच्छति हिमालये प्रति च अभिमुखो



१  
 २  
 ३  
 ४  
 ५  
 ६  
 ७  
 ८  
 ९  
 १०  
 ११  
 १२  
 १३  
 १४  
 १५  
 १६  
 १७  
 १८  
 १९  
 २०  
 २१  
 २२  
 २३  
 २४  
 २५  
 २६  
 २७  
 २८  
 २९  
 ३०

अनात । तदा यद्वा तं मध्य दूतागतं गत्वा उल्लङ्घयितुं  
 लपन्ती लन्दरा प्रेषयति । तत्र गन्तुं चतुर्मेव भागमा  
 ददाति । दक्षिणगतात् आगत्य मेघः हरद्वारं प्राप्य  
 गङ्गां दृष्ट्वा कंठखलस्य मार्गेण हिमालये प्रति आभिमुखः  
 विभोगे तस्य पत्नी कीदृशी कथञ्चन कालमापन्नं कति  
 इति मन्त्र आधामा शीतमिति ।  
 उवाच  
 उत्तरमेव मानवस्य ~~उवाच~~ उवाच भावना कुशलतया  
 निरालो अस्ति । तथा निरहिम्नाः पूर्याः खण्डयित्वा  
 तां प्रति लकोय लन्दरा इति गमयति । कालदालः रस  
 कविः अतः अत्यन्तं मेघं चतुर्मेव आरोपयति मन्त्र  
 कालस्य निगममभ्यस्य । अल्लसवाणं पद्यानि मन्त्रराण  
 मन्त्राणि च लभति । तस्य वाक् चतुर्भवावलीक्य एतद् प्रति  
 यतः मेघ द्वारा महाहस्य लन्दराः लीकतः आसीत् । मेघ  
 अनुलक्षणं कृत्वा परवर्तिनः अनेके काव्यकारा इति कथयन्  
 रत्नानां देवतवन्तः ।  
 आभोजनशीकुन्तलम् ।  
 नारकेषु कालदालस्य प्रसिद्धं विज्ञेयं रूपं  
 आभोजनं शीकुन्तले । निनिर्मलं अस्ति या नारकेषु  
 कालदालस्य रत्नानां यः अस्ति ता आभोजनशीकुन्तले  
 एव मुख्यं रूपेण मिलति अल्पं नारकस्य लम्बस्य आल  
 यकाव्यमिदं कथनं प्राप्तुमास्ति ।  
 काव्येषु नारके रम्यं तत्र रम्या शीकुन्तला  
 तस्यापि चतुर्धाऽङ्गाः तत्र रत्नं चतुर्धमम्  
 लक्ष्मणं अङ्गेषु रम्यं अस्ति नारके हस्तिनापु

(श्री)



दूषयुष्मन्तान्य, विश्वामित्रान्य पुत्र्याः शुक्रन्तलायाः न  
 प्रेम प्रसङ्गोऽस्ति । नृपः दुष्मन्तः अश्वत्थाम् व्याहृत्य  
 कण्वाक्षमं प्रविशति । शुक्रन्तलायाः स्नेहं लभमाहेति  
 भूत्वा तस्मात् स्नेहं गन्धर्वं विवाहं करोति शुक्रन्तलायाः सह  
 पुत्र्यां कृत्वा नगरं गत्वा दुष्मन्ता आपनतां विलसति  
 विभागं शुक्रन्तला अहर्निशं तपति पितृवादशः न  
 शुक्रन्तला दुष्मन्तान्य लभामां गच्छति । परन्तु तत्र  
 अन्त्यापि दुष्मन्तः तौ मन्त्रीकरोति यदा मुद्रिकायाः  
 दृष्टिः आपान्य लभामातिः गवाक्षं दुष्मन्तोऽपि  
 शुक्रन्तला स्मरति । विभागं ज्वालायां दृष्ट्वा दृष्ट्वा  
 निमित्ता भवति बालनीलमकल्पं प्रेम्णाः लभामातिः  
 भवति । पावित्र्यं स्नेहं उत्पन्नः भवति, अनन्तः  
 मन्त्रिणः आत्मं दृष्ट्वा भवति पुनर्मिलनं । अत्र न  
 विभागः कान्तः दृष्ट्वा रत्नं प्रविष्टास्मिन्  
 महाकाव्यं नमः अत्र दृष्ट्वा दृष्ट्वा तदृष्ट्वा नालि  
 तदृष्ट्वा विभागं जन्मः वतत । काव्यं अनेक आदृष्ट्वा  
 मातवज्जीवनस्य अनन्तं प्रीतिं प्राप्तिं पितुः स्नेहं  
 लभामातिः विवाहः बालनायाः विवाहः तथा च आदृष्ट्वा नृपस्य  
 आदृष्ट्वा पारिवार-पत्न्याः लभानं पारिवारान्य अन्य  
 जन्म प्राप्तिं तन्माः कीदृशः कर्तव्यः केन नृपतान्य  
 जन्माहः कीदृशः भवेत् इदं नृप आदिमन्त्र-नालक उपदेश  
 लभते । नालक कोशल दृष्ट्वा रत्न दृष्ट्वा नृप  
 इदं नालक काव्यं कर्मा नृप सामन्तमेव प्राप्नोति







नृपकुण्डान्तर्गतं, विद्वत्प्राप्तं पुत्रं, शकुन्तलायाः न  
 पुत्रं प्राप्तुं इति । नृपः दुष्मन्तः उवाच । नृपः  
 कण्वाक्षमे प्रविशति । शकुन्तलायाः स्नेहं लभामहेति  
 नृपः तस्यां स्नेहं गन्धर्वं विवाहं करोति । शकुन्तलायाः सह  
 पुत्रं प्राप्त्वा नृपः गत्वा दुष्मन्तं आप्येन तां विनोदयति  
 तं प्राप्य शकुन्तला उवाच । तया तं पितुर्वादेशेन  
 शकुन्तला दुष्मन्तं लभामहे गन्धर्वं । परन्तु तत्र  
 गत्वापि दुष्मन्तः तां न स्वीकरोति यदा मुद्रिकायाः  
 दर्शनेन आपान्यं लभामहेति । तदा दुष्मन्तः अपि  
 शकुन्तलां स्वीकरोति । विभागं ज्वालायां हृत्माः दृष्ट्वा  
 विनोदयति भवति । बालनीलकण्ठं पुत्रं लभामहेति  
 भवति । पावित्र्यं स्नेहं उत्पन्नं भवति, भवति  
 मरीचिकः कोक्षमे हृत्मा भवति पुनर्भवनं । उवाच  
 नृपः । तदा तदा हृत्मा रत्नं प्रविष्टं इति मनः  
 महाकाव्यं लभामहे हृत्मा रत्नं दृष्ट्वा तद्वशी नास्ति  
 मादृशी विभागं जन्मः वत । काव्यं अनेक आदर्शः  
 मानवजीवनस्य अनन्तं प्रविष्टं प्राप्तिं पितुः स्नेहं  
 लभामहे । विवाहः बालनायाः विवाहः तथा च आदर्शः प्रत्यक्ष  
 आदर्शः । परिवारं पत्न्याः स्नेहं परिवारं अन्य  
 जनान् प्राप्तं तन्मां कोदृशः कर्तव्यः केन सह तान् ।  
 लभामहे कोदृशः भवति इदं नृप आदिमन् नालक उपदेश  
 प्रपेता लभामहे । नालक कोदृशः हृत्मा रत्नं दृष्ट्वा च  
 इदं नालक काव्यं कलमा सह लभामहे प्रपेता



५

मालवीकादि न मित्रम्

कालिकादि न मित्रम् नारक्य कथमास्ति सकलम्

कथमास्ति यत् कालिकादि न नारक्य रचना परम्पराया

लान्-प्रचारादिति न नारक्य रचना हस्ता आसीत्

लान्तेषु अङ्केषु विभज्यते कालिकादि नारक्य लुगवैशेष्य

अङ्गिन मित्रान्य तथा च मालवीकायाः प्रेम्णां गनीहारक

मित्रवगास्ति । पुराणेषु निवेदितमस्य कथानकमादाय

कोविद्वारा कथनीयमात्रेण कालिकादि नारक्य रचना कृता

आसीत् । कृदा रचना उदाहरण भूतमिदं नारक्य

नृपाणां अन्तः पुरल्लु महिषाणां परम्पराया

नृपकृत कायुकता तथा च कोतेयानां राजपत्नीनां

धौता उदारता उदानता इत्यादयः अत्र नारक्य

मित्रान् निवेदितः सन्ति । यथापि कोविदा नारक्य

नियमान् मालिकादि नारक्य अथा लम्बेन चालक्य

प्राप्तमास्ति तथापि यत् ज्ञानं वर्तते शाकुन्तलम्

न तदर्थान् अस्मि नारक्य

विष्णुमयिगीयः

अस्य नारक्य कथानकं सर्वप्रथमं

महम्मद तत्पश्चात् रातपथ-ग्राहण उपलभ्यते ।

अत्र पुरु रचना तथा च उरुवल्माः प्रेमप्रलङ्घनमनाया

हृदया निवेदितमास्ति । अनेन प्राचीनं प्रेम प्रलङ्घन

कालिकादि नारक्य ज्ञानं सर्वे प्रति आह्वयः । अनिमित्त

अनारमान प्रेम्णां कृता प्रेममवासीत् कोविदलानां

द्वारा सा कृता पल्लवितः पुरातन-यु जीता ।



पुरखः उचकोर्याः उपकार प्रायेण नृपादिति ।  
 राक्षसानां हन्त२५ः अथमुद्रवशात् । उदार कराल  
 तेषां उपकारो उद्वेगो तं प्रात उथाद्यो मोक्ष लब्धता  
 ना यथापि पुरखः अन्यान् लोभ आलस्य  
 काले तथापि अनक लभमाना मोक्षमन ला लक्ष्य  
 पालनं लोकार करोति । विमोहावस्थायां पुरखः  
 उन्मत्तवत् वने - 2 अमीत अतः सुदुर रक्ष्य रूपः  
 रूपः प्रतिपादनमोमन नाले वारु तमेन लज्जालव

पु०६ अत्रवधाषण्य जीवन पारिचयं दत्वा तद् रक्षितानां  
 काम्यानां पारिचयः दयः ?  
 उत्तरम् - संस्कृत-साहित्ये अत्रवधाषण्य लम्ब-व्य इयमाश्रुः ।  
 आरित गत अत्रवधाषः कालदानाय पूर्ववात् अथवा  
 परवात् परत अधुना कालो यकानां नवषण्य  
 लार-रपण भत-भत कलजोत तदनुसार कालदानव  
 अत्रवधाषण्य पूर्ववात् अस्मिन् । अत्रवधाषः कादु कादु  
 कालि काल्य लभान्य कालन्य न्य लम्ब-व्य आलस्यकषु  
 पूर्वतया भतकषं नास्ति आरतल्योत्तराल हविष्यनान्य  
 कार्य कालः लम्ब-व्य शतावदी उमीति हविद्वारा रक्षितं  
 नालकषु अत्रवधाषण्य पारिचयः इति क अनेन कारणेन  
 इयं लिख्यते अतः अत्रवधाषः लम्बात् तृपात्  
 निर्वया पूर्ववात् अस्मिन् । अत्रवधाषण्य कार्य-कालः  
 निर्ववाद रपण प्रथमशतावदी स्व लो लिख्यते । अल-य  
 लम्ब-व्य इमे 2 न्य-य द्वापा व्यापान्य कभनभाति भत-



# निष्ठा रिपु

निर्विवाद रूपेण अश्वघोषः कालदासस्य परवर्ती आसीत्।  
 अन्येन कारणेन इतिहास प्रथम शताब्दी एव अन्य नाम्नाः  
 निष्ठा रिपुः अस्मत् । अथ कविः अश्वघोषावासा आसीत्  
 अन्य गान्धर्वः नाम पुत्रादीनां इति मिलति । अन्य  
 लम्बा-दो इति प्रचलितमस्ति अतः अथ जीवनस्य  
 प्रारम्भे आश्रय आसीत् तदन्तरं न कर्तुं दार्शनिक  
 दार्शनिकः अथ कविः न-आसीत् । अन्य लम्बा-दो वदन्  
 धर्मस्य आश्रयस्य न च सुखाय निन्दा न मिलति  
 अनेक लम्बा-दो कविः दार्शनिकः अथ अन्य लम्बा-दो आश्रय  
 दृश्यते एव ।

कृतयः (रचना) :-

अन्य नाम्नाः ललित कृतयः उपलब्धाः आसीत्।  
 यथा (1) गण्डितोतगाथा (2) लूनालंकाराः (3) कुट्टु-चरितम्  
 4 लौन्दमनन्दम् (5) शारीपुत्र प्रकरणम् (6) वज्र लूना  
 7 महाभारत आश्रयम् ।

कृतानु रचनासु विप्रः एव रचना प्रचलित आसीत्।  
 च ललित । 1) कुट्टु-चरितम् (2) लौन्दमनन्दम्

(1) कुट्टु-चरितम् 2) शारीपुत्र प्रकरणम्

कुट्टु-चरितं महाकाव्यमेव वर्तते अश्वघोषस्य  
 ललित लम्बा-दो-रचितं चानि नाम्नाः निर्विवाद (लिखित)

आश्रयस्य महाकाव्यस्य (लिखित) ललित उपलब्धाः  
 ललित । परन्तु लिखितं अतः कुट्टु-चरितमुपलब्धम्  
 ललितम् लिखितम् एव ललितम् लिखितम् । कथाम्नाः रूपेण  
 अतः कुट्टु-चरितं ललितम् कालादरम् (ललितम् निर्विवाद) लिखितम्।







वि १२१

करोति यदा नः सुन्दरः प्रेम्णा तथा च विमाने  
 १-१६ मनेनैरित्तु बुद्धिः नन्दन्य जीवनन्य उदारोप तथा च  
 मङ्गलन्यमन्त्राय नन्द प्रथमो (हन्माल) खारणाप  
~~वि १२१~~ करोति । यद्यपि नन्दः प्रथम-तु लुम्बगर्भ  
 सुहृदय जीवनं त्यक्तुं तत्परा नोभयत् परन्तु

अन्तः

अनन्त लुम्बगर्भ कर्मनेन कर्मदुःखार्थन्य न्य पुनर्हेन नः  
 लोदुःखार्थ दौर्लभ्यं जातः । अरिगन् महाकाव्ये अत्रवधापन  
 १६-२ लकाव्यकालन्य परिचयः दत्तः प्रलाः गुणान्  
 यमं काव्यं लवध्या पारिष्वमन्ति । आवाधाः कोमलता  
 हिमपता तथा च मानव मनसः शिवदात्मकी स्थितिः  
 कात्र दर्शनीया अस्ति - यथा

ते गौरव कुरुगन् न्यकर्षः

भार्यानुरागः पुनराचर्षः ।

लोडनिश्चयान्ना नपि यमं न तल्यो

तरस्वरंगेषु इव राज हंसः ॥

अतः इदं महाकाव्यमपि लेख्यत काव्यन्य शोभाय न वक्ष्यामि

५०७

उत्तर-  
 भूमिका

उपमा कालिदासन्य - - - ?  
 १. कालिदासन्य काव्यमनेकाग्रं विशेषताग्रं लवध्या  
 पारिष्वमन्ति २. कालिदासन्य लगन्त लाहिन्य यथा  
 भवद्वलया आश्रुतीपमन्ति तथा च भाषा द्वलया तल्य  
 सकलता प्रतीपद मिलति एव । रिल गुणान् आवाधान्य  
 - लगत्काद-इरा यथा भाषाः अलंकृताः यथा-त तथा  
 भाषा अलंकाराणां लल्लत प्रयोगा एव शोभते ।  
 अलंकाराणां यदि कविः ताहुत्मेन लमर्षकं  
 करिष्ये

५.



वि १२१

करोति गदा लः सुन्दरः प्रमिता तथा च वि लाले  
 १-१६ मन्त्रोदरितं बुद्धः नन्दन्य जीवन्त्य उदारोय तथा च  
 मन्त्रोदरितं नन्द प्रमिता (लन्त्याल) दारणा  
 करोति । मन्त्रोदरितं नन्द प्रमिता लुम्बगर्भ  
 सुहृदय जीवन्त्य तथा च लम्बरा नोभयत् परन्तु

अन्तः

अन्तः लुम्बरा कर्मानेन कर्मान्तरात् नन्द प्रमिता लः  
 कर्मान्तरात् दीक्षितः जातः । अन्तः मन्त्रोदरितं अन्तः  
 लः-२ लम्बरा कर्मान्तरात् परित्यज्य दत्तः प्रमिता गुणान्  
 मन्त्रोदरितं लम्बरा पारित्यज्य मन्त्रित । मन्त्रोदरितं कर्मान्तरात्  
 लम्बरा तथा च मन्त्रोदरितं मन्त्रित । मन्त्रोदरितं लम्बरा  
 लम्बरा दत्तः मन्त्रित - यथा

तं गौरव कर्मान्तरात् नन्द

मन्त्रोदरितः पुनराचर्यते ।

लोडनिष्ठमन्त्रोदरितं नन्द प्रमिता न तन्त्रो

तन्त्रोदरितं इव राज हंसः ॥

अतः इदं मन्त्रोदरितं लम्बरा कर्मान्तरात् मन्त्रित

५०७

उत्तर-  
 मन्त्रोदरितं

उपमा कालिदासस्य - - - ?

१. कालिदासस्य कर्मान्तरात् मन्त्रित विमलताम्रं लम्बरा  
 पारित्यज्य मन्त्रित २. कालिदासस्य लम्बरा लम्बरा मन्त्रित  
 मन्त्रोदरितं मन्त्रित तथा च मन्त्रोदरितं मन्त्रित  
 सफलता मन्त्रित मन्त्रित लम्बरा मन्त्रित मन्त्रित  
 लम्बरा मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित  
 मन्त्रोदरितं मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित  
 मन्त्रोदरितं मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित  
 मन्त्रोदरितं मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित मन्त्रित

५.



अस्ति तदा तस्य कोविता अलंकारान्ध्रं चोरेण मूल-प्राभा  
 भवति । परन्तु कालिदासः लम्ब-व्यं इदं लाप्यमस्ति  
 मत् कालिदासः अलंकाराणामनुसरणं न करोति अपितु  
 अलंकाराः एव कालिदासगुणचक्षण-तः । शब्दालंकाराः  
 कालिदासान्त्य प्रियाः तु आन-नेन परन्तु अथालंकारेषु  
 तस्य गतिः सर्वथा दर्शनीया अस्ति । तेषु अथालंकारेषु  
 उपमा नामकः अलंकारः कालिदासान्त्य प्रियतमः अलंकारः  
 अस्ति । उपमेयान्त्य उपमानेन सह तुलना एव उपमा-  
 नामकः अलंकारोऽस्ति । कालिदासः स्व-श्रेष्ठेषु पूर्णा उपमा  
 नामकान्त्य एव अलंकारान्त्य आधिक्येन प्रयोगमकरात्  
 तस्य कोविदो रचनीयं वधं पश्यामः सर्वत्र उपमालंकारान्त्य  
 मङ्गलवाद्य मत्वा लततं प्रवहति । रघुवंशान्त्य प्रथमः श्लोकः  
 अत्र दर्शनीयः अस्ति ।

192  
(1)

वागधाविष्य लम्पुक्ता वागधैवतपत्तये ।  
 जगतः पितरा वन्दे सावतीपरमेश्वर ॥ मानिता अस्ति  
 उन्नत पार्वत्याः शिवान्त्य च लम्पुक्ता (दानेच्छता)  
 शतधा यथाः लम्पुक्तावतन् कालिदासेन मानितमस्ति  
 यथा शब्दं विना अर्थान्त्य अर्थं विना शब्दान्त्य न  
 विनापि महत्वं तथा च शान्तिं विना शिवः, शिवं विना  
 च शक्तिः, कथमापि लम्भव नान्ति ।

113

अन्त्येन कोविदेनैव महाकाव्ये द्वितायमुदाहरणं  
 दर्शनीयमस्ति -  
 वयं लूथप्रभवा वंशः वयं चात्पर्वणमा मतिः ।  
 तिलीपुः दुन्तरं महादुडुपेनास्मि नागरम् ॥



संचारिणी दीपशिखेव शो यं यं तृतीयाय परिवरा सा  
 नरेन्द्रमार्गादृ इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूषिपालः

कालदास(२१)पमा आति दशनीया मया इदुपकारा  
 गम्भीरं लागरं त्वेवुं कालिक तारे तुमति कठिनमिति तद्येव  
 निवयातिगका - बुद्धिद्वारा महतः पूयवंशान्य वपनमापि  
 लम्बावे जाति ।

३ आकुन्तले नृपः दुष्प-तः अनुपमां लौ-धर्म-  
 लापन्मा शकुन्तलां दृष्ट्वा तस्याः सुन्दरतामुत्तमैः  
 प्रकारेण वदामातः ॥

अथारः किललयरागाः कोमलविटपानुकारिणा वाहू ।

कुलुमागिव लौभनीयं भौवनमंगेषु ल-नक्षुभ ॥

अत्रापि दूतनेन किललयनेन सह अकारुण्य सगः तथा च  
 विटपवत् तस्याः वाहू इत्येव अत्रापि उपमादित्तमवली

इन्दुमत्याः (नयनवर इन्दुगतां जयमालावादाय)  
 लम्बावे उपाविष्टानां नृपाणां अग्रतः चलति तत्रापि  
 कालदास(२१)पमा आति उलाधनीयः ।

नरन्यारेण दीप-शिखेव शो यं यं तृतीयाय परिवरा सा

यं यं तृतीयाय परिवरा सा ॥

अत्रापि उपमाद्वारा इदं दशितमिति यत् इन्दुमती

पुष्पमालया सह एकस्य नृपस्य लभ्ये गच्छति तत्रापि

त्यक्त्वा सा कस्ये वदति त्यक्त्वा नृपः निराशो भवति

तस्य निराशा कावकादु कस्येव राशेवत् तथा च इन्दुमती

मुखं दीपवत् । हल्लभोः ग्रहीतृ माला दीप-नोलावत्

वर्णयति । कानेन प्रकारेण अन्ये च अन्यत्र-यस्यापि

कालदास(२१)पमा दशनीयमिति । एतत् निवगता उदाहरण

मात्रम् । दशनीयं कति ।

संचारिणी दीपशिखेव शो यं यं तृतीयाय परिवरा सा

नरेन्द्र-मार्गादृ इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूषिपालः ॥







गुह्यमिति ।

कारः :-

गौरवः एका रस्य-॥ उपलब्धा भवति तदन्ति  
 किशताजिनीयमहाकाव्यम् । इदं महाकाव्यं  
 महाकाव्यान्तु शास्त्रोप परिभाषायां लभ्यते भवति । अनेन  
 महाकाव्येन ह्यगुणानां कारणेन लभ्यते महाकाव्यानां  
 गुह्यतायां निष्कर्षं न्यायं निधारितं कृतमिति । अथ  
 कथानकं महाभारतस्य वनपर्वतः ग्रहितमिति । वनपाठवा  
 वनवासस्य जीवनं आययान्ति । युधाधनस्य शालनस्य  
 पारिचित्यं ज्ञातं पाठवाः स्वे चरन्तः प्रेषयन्ति । इति  
 काव्यं युधाधनस्य शालनस्य व्यवस्थायाः प्रशंसा  
 करोति । युधिष्ठिरं तथा च भीमः शत्रुं प्रति युधुस्य  
 लभ्यते कुर्वतः । युधिष्ठिरः तं स्वमधारणाय  
 लभ्यते प्रतीक्षा करणाय च कथयति । लभ्यते च व्यालाभ-  
 उतागमने भवति । अर्जुनं च इदं प्रशास्त्रं दिव्यास्त्राणां  
 प्राप्तये परामर्शति । एतद्दृष्ट्वा एव अथ कथानकं  
 काव्यं लभ्यते विचार्यते भवति । अर्जुनं च युधुस्य  
 युधिष्ठिरस्य ॥ युधिष्ठिरस्य लभ्यते शत्रुणां वर्णनस्य विधानं  
 अथ काव्यस्य लभ्यते विचार्यते भवति ।

अथ गौरवम् :-

अर्जुनः महाकाव्येऽथ गौरवस्य प्रावधानमिति ।  
 लोभित शत्रूनां माधवमेन विपुलानामिथानां भवति ।  
 अथ ग्रन्थस्य विशेषता लभ्यते । अथान्तर-शास्त्र-  
 माधवमेन कविद्वारा न्याये-२ अथ गौरवस्य प्रदर्शनं  
 कृतमिति । अथस्य गौरवं अथ ग्रन्थ-पारम्पर्यम्



अतः पर्यन्तं पद-2 (अन्तर्गत्य आरवि) करीयुष्यते ।  
 गार्ग्यकालः पाठित्यप्रदर्शन-लयात् । अन्तर्गत्य गार्ग्यकालः  
 आरविद्वारा एव कृतोऽस्ति । आरविना त्वं कोऽपि  
 अनेकं लक्षणं त्वं प्रकाशयिष्यस्य प्रदर्शनं कृतमास्ति  
 तन्मन्त्रः इदं पाठित्यप्रदर्शनं तत्त्वं युगात्मावस्थया  
 कृतमास्ति । आरविना जा एव आवश्यका परिपूर्णा  
 कृता । तत्त्वं पाठित्यप्रदर्शन-लयात् त्रयं आधारेण  
 ज्ञातम् । व्याकरणं चानि, त्वं च रचयन् । उच्यते वाच्यम् ।  
 अर्थस्य विनियोगात् तु एतादृशी उच्यते यत् एक-य  
 श्लोकस्य द्वे त्रये अथवा चत्वारः अपि अर्थः  
 भवेत् शब्द-पूर्वात् । त्वं पाठित्यप्रदर्शन-लयात्  
 कारणं अपि उच्यते यत् आरविना एक-य एव अर्थस्य  
 (नकारण) गार्ग्यकालः एव लक्षणं पूर्वकं श्लोक-  
 रचनां कृतोऽस्ति । लीनित शब्दानां गार्ग्यकाल-  
 काल-तः जायमाना भवितुं शक्यः । गार्ग्यकाल-तः अस्ति  
 पद-2 अर्थान्तर-भाषायां उदाहरणमिदं दर्शनीयमिति  
 यथा उचितं मनोहारि च दुर्लभं वचनं उच्यते  
 (मनोहारि हितकरस्य वचनं दुर्लभं भवति )

- (१) दुर्लभाः सर्वं मनोरमा इति कृगिरः ।
- (२) गुणतां नयन्ति हि गुणान् लक्ष्मीः ॥
- (३) गुणाः प्रियत्वेऽपि कृता न लक्ष्मवत् ।
- (४) इव विरोधाऽपि तन्मन्त्रं महात्माभिः ॥
- (५) न वच्यनीयाः प्रभवोऽनन्तविभिः ।
- (६) वचनं हि प्रमाणं गुणं न वचनम् ॥

०. वास्तव तत्त्वज्ञानं सर्व-मनोहरं च ।



५/ लंकाभ-र खलु तेजसा जग-न महानि-च्छति श्रुति म-भतः ।

६/ प्रकृतिः खलु वा महीभक्षः लहते वा-मलमु-नीत यथा ।

७/ प्रकर्षत-न्ना हि रेणो जयन्तीः ।

८/ अवहित गोमाधु लखान दान्तनः ।

९/ न तितिक्षा लमप्रान्त लाधनम् ।

१०/ जतां हि वाणी गुणमेव भाषते ।

किंगारिकेन द्वितीय लंगल्य निम्न लिखितन उल्लोकन स्मृत्य-

नृपाल्य जीवने लवथा परवात्त कृतमानित ।

लहला विद्वीत न क्रियाभविष्यकः परमपदा पदम् ।

वृणते हि विमृष्टम् कारणे गुणलुब्धाः स्वप्नमेव लम्पकः ॥

प्रथम लैर्गे इयमुन्नितरपि लवत्र प्रचालित/ओलित

वृद्धान्त तं वृद्धिभ्यः पारम्भं प्रमाणं

अवान्त मायाविषय मे न भाषिन् ।

किंगारिकेन स्तानि पूर्ववतानि लवणां उदाहरणानि

मारवेरथगारवा-२/९ लम्पकानि लान्त ।

पुनः माधल्य पारिचयः पूर्वकं लल्य काव्य पारिचयः लक्ष्मण देयः ।

उत्तरः अरक्तः पञ्चात् ललित गहाकल्यकारण माधल्य

ल्यनमलित ॥ माधन ल्यनमे महाकल्य ॥ विद्युपारलवदा ल्यनमे

लक्ष्मणः पारिचयः देयः । तदनुसारं लल्य विद्यु दलकनिवाहम्

तथा च विद्युमह सुप्रभुदेवः आसीत् । अयं कल्यमानित

गुर्जर नरेशस्य राजा आसीत् । आ-चापः वाग-नः

तथा च आनन्द नदीनः । वकीयथा लल्य ग्रन्थमाः



११८१८-५ काव्यशास्त्र-११ अलङ्कार-११/२१६२०/ २१०१ उल्लेखः  
 कृतोऽस्ति । कव्ये द्वयोः आन्वययोः जीवनमालः नव  
 शताब्दयोः <sup>अतः</sup> पूर्व <sup>अस्ति</sup> । अतः तदनुसारं प्रथम-  
 काले अथवा शताब्दयोः समेत एव अस्ति । रावट् कृतं  
 तृप्त-पुष्टं कव्यशास्त्रम् ग्रन्थे कविराजभागे भाष्ये कालदासस्य  
 तत्त्वम् एवोक्तं तस्मिन् । अनेन कवे एवमेव अवाप्तं यत्  
 नव शताब्दयोः प्रारम्भे आद्याल्ये जाह्नव्ये गौरवमभजत  
 त्वमेव आद्येन शिशुपालवधस्य द्वितीये लगे काशिकावृत्तिः  
 तथा च नेपाली अनयोः द्वयोः व्याकरण ग्रन्थयोः उल्लेखः  
 कृतोऽस्ति । काशिकावृत्तिः रचना कालः सप्तम शताब्दयोः  
 मध्यः अस्मिन् अस्ति । हर्ष-चरिते अपि नेपाली  
 उल्लेखः अस्ति । अनेन आद्याल्ये सप्तम-  
 शताब्दयोः उत्तरार्धः एव आविर्भूतः शक्यते ।  
 कालः —

शिशुपालवधस्य एकमात्रं रचना अस्ति ।  
 निशात लगेण विन्यासितस्य काव्ये महाकाव्यस्य कथानं  
 महाभारतात् संगृहीतमस्ति । मुख्यं रूपेण हर्षणस्य  
 शिशुपालस्य च युद्धं तथा च शिशुपालस्य च मृत्युः  
 अन्य महाकाव्यस्य महत्वपूर्णं नमस्ति । अत्र के-  
 द्वारा इदमपि प्रदर्शितमस्ति यत् हर्षणस्य शिशुपालस्य  
 मात्रा सह अयं संग्रहः आसीत् यत् शतमपराध-  
 पयन्तं हर्षणः शिशुपालस्य किमपि अस्मिन् न  
 कारयामात् । यदा सैव शताब्दिका आविर्भाति तदा  
 शिशुपालस्य मृत्युः निश्चित एव नारदः क्षीरकाशमात्रम्



1. शिवाय पालक-माता-पिता-चारण-गणना-करात । तं ह-तु-न  
मु-साहिती । तस्मिन्नेव काले मुदिच्छिरस्य  
म-स्य निम-गण-माग-च्छात । निन्दार-विगच्छिद्वार-हृषणः

~~विनाश~~ मुद्राधिकारण राजालगाया मन्त्रात तत्र उन्मेषादना  
 विनाश भवति। विष्णुपालं मन्त्रं लक्षणं धारणा आलोक  
 यत- कृष्णं प्रति एव अर्घ्यं दत्तं भवति, अन्य विचारण

शिशुपालः लामयनं न करोति । उपशब्दानां (गालीनां) न  
मावप्रगेन कृष्णस्य अपमानं करोति ह्युग्रहृदये युद्धं भवति ।  
परिभनं युद्धे कृष्णद्वारा शिशुपालः हन्यते । एतावत्था

वशाया विज्ञानेनाः महाकाव्ये ललित । महाकाव्यान् यथाः  
विज्ञेयताः ललितं तानां ललितानामुत्तरं वयं शिशुपालवधे  
ललागते । किशोरादिनीयं महाकाव्यं शिशुपालवधेन आदित

[illegible]

माध्यम जाति राधा गुणाः -

आलोचना-मिदं कथनं यत् शिशुपालवधे  
उपमाया! अथ गान्धर्व-पदनालितान्य-यं शिवजी (गंगा)  
युवहीत इदं तु निविवादं यत् आलान्विता! गोक्षेत्राभि  
नानलितान्य-यं यत्

मालविकाग्नीध्रम् । आनन्दवर्षाणां तया च दीपितः ।  
मदनमालागोपाल प्राप्तावन्ति । एतेषां त्रयाणां गुणानि ।  
एकस्मिन्नेव काले । सोन्नयनस्य साक्षात् । बहुभुजा प्रतीका ।

कौटिल्यः शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं ।  
कौटिल्यः शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं । शास्त्रं चरितं ।



पञ्चाङ्ग

नीति

दशमस्कन्ध

अथवा

पदम्

कालिका

पाण्डित्यान् - यः अथ प्रवृत्तिः निम-व्यापारः । राज-मालिका  
 कावित्वं गौरवा व्यवहारः राजनीतिः पद-तथा च  
 मोक्षे दाशानक पाण्डित्यान् पराकार्यं मिलाते तत्र  
 गालः एकः लघुत-त्रयः - लघुत-त्रयः विद्वत्पूजा व्याप्तये  
 कालकृताः । व्याकरणं राजनीतिं लोकापयोगं  
 मोक्षं दर्शने पुराणं शास्त्रं अलंकारशास्त्रं लेखितं  
 विद्याभोगश्च विद्यायाः हस्ता विद्यायां च तस्य  
 अलाभा-यः आधिकारः । उपमा कालिकास्य  
 लोकाभोगं विशेषतः अस्ति । उपमायाः लक्षणं तथा च  
 अन्वितं प्रयोगः यत् कालिकास्य मिलाते तत् अन्वितं  
 युक्तिः एव तथापि लुब्धराणां मुपमाना विदुषां  
 लब्धे अभाषासि नीति । उपमास्य लब्धे नीति मुक्ता लता इति  
 अलंकारं कृत्वा लब्धे लब्धमाकाशे गङ्गावत्  
 दृश्यते । हिम द्युलवत नारदलोपमा लुग्गुरुपवत  
 अथवा अस्ति विद्युत लम्बाहः शरदता मेघ तुल्यः  
 आतमेतः श्वेत मेघः एव नारदः तथा च विद्युत  
 एव पीत लता इत्यादिषु उपमायाः समन्वयः दृश्यते ।  
 अलाभक्य कारणं कृत्वा लब्धे लब्धमाकाशे गङ्गावत्  
 लुग्गुरु लब्धे अस्ति । इतः निम्नं अन्वयः  
 उपमाः मोक्षे वयं पदभागः एव । अन्तरं केवलं  
 उपमास्य यत् कालिकास्य लोपमानु लोपमास्य लब्धे  
 लब्धलोपमानु पाण्डित्यं पददर्शनम् ।  
 अथ गौरवम् - अथ गौरव आरविनी लब्ध लब्ध  
 तुलना लब्ध एव, राजनीति युक्तानां व्यवहार परिष्कारानां

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13



~~Index~~

17-11-1912 10.17.1311

$\frac{1}{6} \times 6 = 1$

$\frac{1}{2} \times 21 \times 21 = 21^2$

मधुरा मधुबोधितमाधवी - मधुसूक्तमधोचितमेधवा

मन्त्रकाराणां यः। मन्त्रकर्मभेदवनिश्रुता निश्रुतायास्तुत्याम्।

एतानि लानि वदन्ते उदाहरणानि यत्र ग्राह्यं काल्य  
पदं लानि लान्य (लान्य) लाना विद्यमाना अस्ति लान्य लान्य



वैजयंते लिखितमस्ति यत् गोविन्दो ज्ञानोः परमेश्वरः  
 (एवं) गन्धर्वः नास्ति तथापि तस्य व्यञ्जना प्रणाली  
 कानुपगमा कल्पना परिमितं अस्ति। लिखित महाकाव्य  
 परंपरायां द्वितीयः लक्षणस्तु व्यञ्जितत्वात् भावः एव।  
 भावः अलंकृत शैल्याः कोषे रक्षितः, गोविन्दो उपायो,  
 कोषो गान्धर्वः तथा च पदलोचने एवमुच्यते।  
 काव्येषु भावः इति कथं गुणैरुच्यते। प्रणालीनां  
 प्रयोगां गुणानां एकं लक्षणं विशेषं इत्युच्यते।  
 चरितार्थो अस्ति भावो लक्षितः त्रयो गुणः।

संशयः  
 अविश्वक

प्रश्नः श्रीहर्षस्य परिचयः तस्य काव्यस्य च लक्षित परिचयः  
 द्वयः।

उत्तरम् :- भावस्य पञ्चात लिखित महाकाव्यकारेषु श्रीहर्षस्य  
 एव स्थानं प्रधानीयमस्ति। मुनिश्रीशतावध्याः उपराध  
 श्रीहर्षस्य नेपथ्याय चरितम्। चरितमिति महाकाव्यस्य  
 रचना कृता। गोविन्दो ज्ञानोः परमेश्वरः प्रानिदि  
 पालितगोरायां ज्ञातः। श्रीहर्षस्य काव्यकव्योपरिचयः  
 राजलगायां लिखितः कालात् स्वयमेव लेन लिखितमस्ति  
 यत् तान्त्रिकस्य कालानुसृत्य लक्ष्यति इत्युच्यते।  
 इत्युच्यते। श्रीहर्षस्य लगेय काव्यकव्योपरिचयः राजा  
 लिखितं चरितं काव्यस्य ज्ञानं चरितं कालात्।



सम्राजः हर्षेण पारयय दत्वा लालिषुखला-॥ -॥८॥ -॥१॥

पारयय दत्वा

सम्राजः = भारताय वीरहाय हर्षवर्मा-॥५॥ गये प्राणिदुर्मासि । अ. स्त्रिः  
 कुशिलीपः कुशिलीपः (न. ५) तेषां च लालिषुखलाः क्रीणीत् । अयं  
 नृपः वीरहाय प्राणिदुः क्रीणीत् । अतः काल्यजीवन सम्बन्धे  
 इयं लल्लता क्रीणीत् यत् तस्य राज्यकालः लल्लता वीरहाय  
 भारताय गये पारयय-तमासीत् । हर्षेण नारकानां समूहः  
 कालिषुखला-॥ गाली चकानाभिः कथनमिति यत् अयं नृपः  
 यद्यपि प्रतिभावान् विद्वान् क्रीणीत् यवन्तु राजा  
 लल्लताय राजकायेषु एतावत् कालः भवति यत्  
 लालिषु रचनय कथं न निभयः लभते । अतः पानि  
 नारकानि हर्षेण नाम्ना लालिषु रचना काण्डावकाशः  
 कालिषु क्रीणीत् । नृपः च तेषां कलिषु प्रचुर-  
 मात्रायां वानमभ्यर्च्यत् तथा च नृपः स्वनाम्ना  
 तेषां नारकानां प्रचारः प्रसारः कारितुं शक्यते  
 किमपि ल्यात् । त्रीणि नारकानि हर्षेण नाम्ना अत्र प्राणिदुः  
 लीनित । परन्तु इदमपि सम्भवमिति यत् विद्वान् रूपद्वारा  
 एव तेषां नारकानां रचना अभवत् ।

नारकानि =

हर्षेण नाम्ना त्रीणि नारकानि उपलभ्यन्ते यथा  
 प्रियदर्शिकः रत्नावली आशानन्दः एतेषु ग्रन्थेषु  
 रत्नावली तथा च प्रियदर्शिके नारके लल्लता हर्षेण नाम्ना  
 चत्वारः - २ क्रीणीत् । अयं कथावल्लुनी तथा च  
 रूपरेखायां लभ्यता अस्ति । अयं नारकः नाम्ना



राजाद्वि

उदयनः तया च राजगह्वरे गालवदत्ता कालि ।  
 रत्नावली नाटके अङ्कायाः राजकुमारी (नागरीक) (रत्नावली)  
 तस्य प्रेमिका अस्ति । पूर्वं उदयेन सह तस्य प्रणयः  
 तदनन्तरं च विवाहस्य प्रसङ्गोऽस्ति । अल्प आभोजन  
 गच्छीति भाग्यद्वारा कृतमासीत् । यदा जलपातः  
 जलमग्नः भवति, रत्नावली स्वमनीषं दशाम् उदयनस्य  
 राजकुमारे आगच्छति किञ्चित् कालं यावत् ता  
 गोपिका नतं कार्यं करोति । अनन्तरः गालवदत्ता द्वारा  
 रत्नावलीयाः विवाहः उदयेन सह भवति । पत्युः  
 (पुत्रायाः) गालवदत्ता (पिताद्वयः) त्यागाः अन्यत्र तुल्यं  
 नास्ति । पत्नी पत्युः पुत्राय स्वाजीवने सहपत्न्या  
 आगमनं कथं नित्यं स्ताद्वयं तु अन्यत्र कथञ्चिदपि  
 लभ्यते नास्ति ।

2. प्रियदर्शिका नाटिकायां उदयनस्य प्रियदर्शिकायां  
 सह प्रणयः तदनन्तरं च विवाहस्य वर्णनमास्ति ।  
 प्रियदर्शिका अवस्थायाम् नागनाः उदयनस्य अन्तःपुरे  
 आगच्छति अनन्तरं उदयनस्य परिणीता भवति किन्तु  
 द्वयोः नाटकाः स्वत्वारः - 2 अङ्काः सन्ति ।

3. नागानन्द नाटिका तस्य द्वितीय रचना अस्ति ।  
 अल्प कथानके पञ्चाशु अङ्केषु विवक्षितमास्ति ।  
 आदिगण जीवतवाहनस्य आत्मा तस्य कथा  
 विचित्रा अस्ति । जीवतवाहनः गच्छत्येव नागानन्द  
 तस्य रचने स्वात्मनो मर्त्यता । तस्य आभुदरा  
 तुल्यता गौरवदत्ता तं पुनर्जीवितं करोति । मृतः मर्त्ये

मोक्षद्वय

7

उदयनः



जीवितः जीवति निष्कलं सुखं सुखं गम्यादपि प्राप्तिना  
 काला न्याहारः परिभागे करोति । आत्मनः रूपेण हि  
 हिन्दूनां लोकाणां च विन्यासां तुन्दरं लोभमभ्युपगम्य  
 उपशेष्टः आदि कांशे रूपेण एतां नृणां नारिकानु प्रसूतं रत्नरूपं प्रधानं  
 अस्ति । संस्कृतं नाहित्ये ह्येवं एव नारिकानु परम्परायाः  
 प्रारम्भः इति लोकोक्तिः । नारिके गुणानां सुखं तस्य  
 रचना संस्कृतं नाहित्ये अनुपमाने रत्नानि लोकोक्तिः  
 वस्तुतया योऽपि ज्ञानं ज्ञानानामभिव्यक्तिः किंचाप्यन्यं  
 अभिनेयता तया च भाषा शैली इत्यादीनां तन्मात्रं सुखं  
 तस्य नारिकानि पूर्णरूपेण लब्धानि सन्ति ।

नारिकः अथवा संस्कृतं नाहित्ये कालं लघुनाल्य  
 नाधिकारः इति तस्य नारिकानां भाषायां लघुताम्  
 संस्कृतं नारिकं नाहित्ये कालोदास्य पश्चात् अवयुतः  
 एव लघुनाल्य लघुनाल्य नवमशताब्द्यां  
 इति दिनां राजाशेखरः लघुनाल्य अवयुतः अवयुतः  
 (स्विकरोत्) । नारिकारमकरोत् । अवयुतेना लघुनाल्य  
 लोकोक्तिः रूपेण लोकोक्तिः परिचायः सः अस्ति । तस्य  
 आकारेण अवयुते विदग्धं प्रातल्य अन्ति पदमपुनरुक्तम्  
 नारिके अभवत् । ल. सुखं गन्तुं दल्य तैत्तरीय शास्त्रायाः  
 लघुनाल्य गन्तुं दल्य तैत्तरीय शास्त्रायाः  
 तस्य पितामहः कर्तुं गोपालः स्यात् पिता कालकेः आमेत  
 भातुं नाम गन्तुं कर्तुं आमेत । यद्यपि अवयुतः  
 लघुनाल्य नाम कालकेः आमेत परन्तु अवयुतः नास्ति  
 एव तस्य अन्तिः इति अस्ति । यद्यपि तस्य लिखितकालः

मि.प.  
 वारं  
 पं.  
 अथ  
 सम्पूर्णः

१  
२  
३  
४  
५  
६  
७  
८  
९  
१०  
११  
१२  
१३  
१४  
१५  
१६  
१७  
१८  
१९  
२०  
२१  
२२  
२३  
२४  
२५  
२६  
२७  
२८  
२९  
३०  
३१  
३२  
३३  
३४  
३५  
३६  
३७  
३८  
३९  
४०  
४१  
४२  
४३  
४४  
४५  
४६  
४७  
४८  
४९  
५०  
५१  
५२  
५३  
५४  
५५  
५६  
५७  
५८  
५९  
६०  
६१  
६२  
६३  
६४  
६५  
६६  
६७  
६८  
६९  
७०  
७१  
७२  
७३  
७४  
७५  
७६  
७७  
७८  
७९  
८०  
८१  
८२  
८३  
८४  
८५  
८६  
८७  
८८  
८९  
९०  
९१  
९२  
९३  
९४  
९५  
९६  
९७  
९८  
९९  
१००



# दशनीयमः २०

नमोऽस्तु पूर्वम-यानि रसाने आत्मनः परन्तु उद्वेगानां आलोचनाः  
विहाय तस्य लक्षणं संक्षेपेण शोभायुक्तं चित्रितं तस्य  
अवभूतं / सुप्रसन्नशोभायुक्तं पूर्वोक्तम्  
नारकानि - स्वयम्भूति

(१) अवभूतः नाम्ना शीघ्रं चारुकाय उपलब्धवान्  
लोचनं मालती माधव, महावीर चरितं तस्य च उत्तरराम-  
चरितम् । मालती माधव दशनायकानां विशालं

प्रकरणमस्ति । तस्य कथा सर्वथा काल्पनिका अस्ति ।  
कालिगन् मालत्या माधवस्य च प्रेमप्रसङ्गः लघु रसो  
अङ्कितः अस्ति । यद्यपि कालिगन् नारके गौतमस्य

उन्मत्त चित्रितो अस्ति परन्तु सम्पूर्ण नारके प्रेमः  
उन्मत्त उदात्त च कल्पना प्रस्तुता अस्ति । तस्य  
कवि विरुद्धं प्रेम-लगावत् हानिकारकमिति स्वीकरोति

२ महावीर-चरितं -

सुप्रसन्नशोभायुक्तं चित्रितं नारके वीर रसो  
प्रधानतया अस्ति । कालिगन् कथा-लगावत् पूर्वोक्तं  
लगावत् अस्ति । तस्य कथा इदं दृष्टव्यं अस्ति यत्  
मान-कथा कायान् लभति तानि राम विक्रमान् रावणस्य  
प्रेमद्वारा अस्ति । आदर्श पुरुषस्य रूपेण रामस्य चित्रणं  
दशनायकास्ति । कालिगन् वदन्त्य दशनायक-लगावत्

अवभूतः निम्नतास्ति । कालिगन् रावणस्य लक्षणम् सहायक  
भूत्वा रामेण सह गौतमस्य आनीत । अतस्त्वं  
रामद्वारा तस्य वधः अभवत् ।

नारक पञ्चरत्नम्



## उत्तरराम चरितम्

कथावस्तु

कथा  
वस्तु

आदिमन् नालके रामायणस्य उत्तरादिकृतमस्ति ।  
 काल्य नालकस्य कथावान्तः उत्पद्यते । लोकोत्तममस्ति । रामायणस्य  
 उत्तरकाण्डस्य एकः प्रसङ्गोऽस्ति यत् निरुद्धा लोकपवाद  
 भूत्वा स्व रामः लोतायाः परित्यागमकरोत् । इदमेव  
 आचार्येण कथा गता कविद्वारा आन्य नालकस्य रचना  
 कृतोऽस्ति । रामायणस्य अपेक्षया आदिमन् नालके  
 कथा नवीनता लीनः । तत्रापि अवभृतेः कथावस्तु  
 मौलिकरूपेण दृश्यते । नालके अनेके विभाजिते  
 आदिमन् नालके कथानकं स्पष्टमस्ति । (रामायणस्य  
 कथावस्तु लोतायाः परित्यागमकरोत्) लोता लक्ष्मण-  
 द्वारा आनितानि चित्राणि पश्यन्ति । तस्याः मनसि  
 तपोनिर्गुणं दृष्ट्वा इन्द्रः उत्पन्नाः भवति । दुर्ग-  
 नामका गुप्तकरः लोता लक्ष्मण-द्वारा चित्रितं लोकपवाद  
 रामस्य लक्ष्मणे उपस्थापयति । लोतायाः त्यागस्य पश्यन्त  
 रामः दृष्ट्वा लोतायाः लक्ष्मणे विलापं करोति । नालके  
 पञ्चमध्यायस्य रामपुत्रलेखनस्य लक्ष्मणपुत्र-चन्द्रकुलस्य युद्धवर्णनमे  
 मस्ति । अन्ते च राम लोतायाः पुनर्निर्गुणं भवति ।  
 रामः लोकहिताय इमां प्रतिज्ञां करोति -

चरित्राणि

एतेह दयां लोकांश्च यदि नो ज्ञानयोगेभ्यः ।

आराधनाय लोकांश्च भुञ्ज्यते नास्ति मे वीर्यम् ॥

उत्तरराम-चरितम् अवभृतेः लक्ष्मण-लक्ष्मणमस्ति ।

कथानकदृष्ट्या, पात्र-चरित्रचित्रणदृष्ट्या, इदं नालके

अस्ति मौलिकमस्ति । आदिमन् नालके रामायण लोतायाः च



त/ ५०६५

५२१३

अर्थे तन्मास आदेशो चारिषा चित्रणमाह । इह नारक  
रसस्य लक्षणं वर्णना लक्षणमाह । वात्सर्गिक रमायणस्य  
नारकस्य आधार ग्रन्थः अस्ति । वात्सर्गिक रमायणस्य  
आरम्भः करुण रसैव सह एव अभवत् । एतादृशी  
रसस्य लक्षणं भवभूतिद्वारा आश्रित नारकेऽपि  
उपलब्धमाह । मुख्य रूपेण विप्रलम्भ स्वरूपाः  
कांचिद् दृश्यते परन्तु तस्य परिणति अपि करुण  
रसेऽपि ~~दृश्यते~~ लभ्यते भवभूतिना इदं लोकोक्तमस्ति  
एवम् एतां करुण रसं निमित्तं भवति

चिन्तः प्रथमं प्रथमं विवर्तनम् ।

आवर्तबुद्धदतरङ्गमगान् विकारान् तत्सममवस्था ॥  
अन्तो यथा सलिलमेव तत्सममवस्था ॥

उपपन्नं

आशात गुरुवर्तया लवण रसस्य करुण रसस्य एव प्रधानता  
अस्ति । (लोता विधौ रमन्त्य विनापः अनेके लाल्य  
दृशनीयः अस्ति) भवभूतिः कथयति यत् मया  
विचारितं जलं व्यवहृतं तरङ्गाः कथयन्ति  
तरङ्गाः व्यवहृतं यत् आवर्तान् भवन्ति परन्तु  
तत् जलं जलस्य एव विकारोऽस्ति । अनेके प्रकारेण  
गुरुवर्त करुण एव, अन्ये रसाः तत्त्वादेव उत्पद्यन्ते  
विवर्तयन्ति । रमन्त्य कारुणिका दृशा विनापस्य  
न केवलं रमन्त्यः (आपते) पशुपाक्षिणः वनोपतयः  
रुदन्ति एव । पाषाणमाप ह्रावतं भवति, मया —  
अनेके शाला रोदति दलति प्रजल्य हृदयम्  
व्याधायकं अनेके नारं लोता रमन्त्यमपि आगच्छति



यश्च यति च तं - विद्वतो ज्ञाति । गमादा पुत्रपातगात्  
सीताय निजान्त । परे - विद्वतो ज्ञाति । गमादा पुत्रपातगात्  
रामायणस्य प्रतिपादितं लीला-निबन्ध-सु च दृष्टं । अनेकानि

राजाजी देखा उ-गत नत-जगति लक्ष्मणजी सहित ही।  
 पुनः राम नन्तु हिमात जानाति । राम! नीलगात्र लक्ष्मण-  
 दोनों कारणेन आपे नियन्त्रितः भवितुं यत्-स्वल्पं अपवादस्य  
 अभावत्वेन आप-न प्रत्यक्ष नीला अनलक्ष्योक्तिः शिद्वरा  
 लक्ष्मणस्य चित्तः कथं नृणां जीवन धारणं करिष्यते इत्यादि  
 प्रयोगेषु राम मुख्यात् प्रतिपदं करिष्या एव उच्छ्रजति । स्तब्ध  
 उत्तररामचरितस्य काव्यिकं वर्णनं द्रष्टव्यं आपा-वकाशः  
 इदं कथनं अनित्यमस्ति यत् उत्तररामचरितं अवग्रहितं  
 विज्ञेयते ।

[illegible]



3  
कथं इति किं कथं कथं  
1  
शिवम्

सिद्धं नान्येषां भूतलगात् । यद्यपि अहं पु  
विभाजित आत्मिनः नाटक नाञ्जानुनारण द्वापद्याः वृत्ताः  
महर्षि (ब-दान) भीमद्वारा अवति । नाटके इयं कविः  
मौलिकता आत्मा अतः कानिना इनेक अिलेषु नाट्य  
कुशलतया । पारिचयं देत्वा कानिना गौलिक पारिवर्तनी  
परन्तु । परन्तु स्थाने पारिवर्तनी कानिचिद् मुख्य  
कथायाः अनुकूलानि कानिचित् - च प्रतिफलानि ।  
गह्वरारतल्ये पुलिद्ध पात्राणां लगायाजनं नमो आत्मिनः  
नाटके लम्बागद / पात्राणां चरित् चित्रण विशेषरूपेण  
गोप्य । आरम्भभाजनश्च चित्रण अहं नारायणश्च  
लम्बागदयते । लम्बागद नाटके कौरवसत्य लम्बागदयमात्ता  
परन्तु कतिपयषु लम्बागद कुरुषल्य शृङ्गारल्य शा-तल्य च  
प्रमाणः लम्बागद एव । शृङ्गार प्रधाने आत्मिनः नाटके  
दुर्गावतल्य आनुमत्याः - च मध्ये प्रेम प्रलङ्घनः कथञ्चिदपि  
आनुमत्या न गजते इदमपि भवेत् अतः शृङ्गार सत्य  
चित्रां कविः विवशतः अपि भवेत् तथापि प्रकृतेना  
विशेष-न दृष्ट्याना कथानकल्य च चित्रण आजापुण  
आषायाः गह्वरम-न कविद्वारा देत्वा आत्मा । आजापुणल्य  
गह्वर गह्वरश्च प्रमाणल्य प्रशाना लम्बागदः अपि कला इति ।  
परन्तु कविः गह्वरयमसिमनः अलान् सर्वः श्रद्धादितमकि )

कथान  
सम्बन्ध

आनुमत्या







वीणा अदृश्य च ह्ये चारत तथा कादम्बरिणी लोकोत्त  
 गच्छन्नाहृत्य लोकोत्त प्रदशयन्त / काव्यगुरु गद्यगगन  
 देहाभागाणां प्रभाकरः आसीत् । अतः परवातनाः गद्यकाराः  
 एतादृश्या प्रभावताः लभन्त । रत्नपालक्य तिलकगजजरा  
 वादीभस्मिहस्य ६६ गद्य निन्तागण ७७ वामन अदृश्य  
 ८८ वैद्यभाषाण चारत ७७ इत्यादयः गद्य ग्रन्थाः प्रामुख्ये  
 लभन्त । गद्यकाले लोकोत्तलाहृत्य एतादृशः कालः  
 आसीत् अतः तदानीं काव्यानामप्युद्गमः लक्षण ग्रन्थाणां  
 रत्नगणः प्रचारः आसीत् । अतः पद्यकाव्येन सह  
 गद्यकाव्यानां मिश्रितकालपर्यन्तं विस्तृतम् अभूत्  
 आसीत् । अतः अनेक भुगो ह्येके गद्यकाव्ये  
 ६६ प्रवृत्ताः ७७ तथा च अनेककादाव्यासनां  
 शिवराजावलिधामिना ६६ गद्य काव्ये द्वेष्ट पद्य आगच्छेत् ।  
 अतः गद्यकाव्यानां या लराण (नदी) आदि  
 कालात् प्रवाहित आसीत् वादिक लाहृत्य तस्य द्वाराः  
 निनिष्पाद रूपेण प्रवाहितः अभवत् । तदनुसरन्  
 प्रवादिनामाद्यामेव अनेकेषां गद्यकाव्यानां रत्नगण  
 लोकोत्त लाहृत्य गेलते एव । अतः लाहृत्य तादृश  
 लिपातेः नास्ति सम्पदपद्यम् । तस्मै सके गुरुणे  
 कारणाभेदभाष्ये अस्ति अतः पद्यकाव्यानां कठोरि करणे  
 लुल्लग्न लरल च अस्ति । गद्यकाव्ये लमरण  
 पद्यवत् लरल नासीत् अतः गद्य प्राते विशिष्ट  
 रागा न दर्शितः कृतवत् । द्वितीयादिक  
 द्वितीयादि कारणे अतः पद्य रत्नगण यथा लरल

कठोरि करणे



अनीति न अनीति लादूरी गद्य रचना । छन्दानु कवितो-  
निर्माणे नरलगाय । छन्दानां प्रत्यक्ष व्यवधाने कवि-  
उत्तमान् यथाकान्ता २। वदानामव्ययानां न्य माध्यमेन  
उत्तमि न्य शान्ति । पद्य गद्य रचनायां प्रत्यक्ष विधा-  
नान्तर्गतः अनीति । अन्तः यथा पद्यान्त्य आविष्टमुत्तम  
न्यतः यथा नित्यं गद्यमापि अनीति ग्रन्थानां माध्यमेन  
रीकानामालोचकानां माध्यमेन नमुज्ज्वलनेन )

[illegible]



स्वी कुर्वन्ति मत् पञ्चात-रावत् कथानां भाष्यम-न नीति  
शास्त्रान्य शिष्टा एव दीडि-नः उद्देश्यमस्ति । पर-तु  
(नृदयतायाः) अनु-र-ज-मापे वयं तत्र पश्यामः । यथापि  
-मित-शास्त्रान्य, राजा-मित शास्त्रान्य, कामशास्त्रान्य-य  
विन-य-नं वयं दशकुमार पश्यामः पर-तु लोककथानां  
भाष्यम-न काव्यकालप्रदर्श-नमापे दीडि-नः उद्देश्यमस्ति ।  
यथापि कथानु अनेक प्रलङ्काः हलङ्काः निमित्त ये लोक  
ललाटारिण उपभुक्ताः न सन्ति । दीडि-नः गाथा प्रामाण्य  
पाठ-साधन । विषयालय शिल्प-नः निष्ठा अनुपम  
ललित-नं वयं पश्यामः । यदि काव्ये न केवलं गद्यस्य  
आपत् विविध-नशास्त्राणां विषयानां ललाटारिणमापि  
काव्य दृश्यते ।

दीडि-नः पदमालम्भ-नः  
आलाप-का-नाम-द कथनमुपमा कालप्रदर्श-न  
भाष्यम-न गारव दीडि-नः पदमालम्भ भाष्यम-न  
-मापुणाः, दीडि मूलतः ललाटारि-याकार-यापः, अस्ति  
परन्तु दशकुमार-चरित-स्य रचना द्वारा तत्र इयं दारणा  
निवर्त्ता । वाङ्मन-कला मत् आन्धापः काव्य-भाष्य-तु  
न शक्यते । ललाटारि-नये मत् वयं तस्य मुद्दि वं भवं  
पश्यामः तत्र दशकुमार-चरित दृढमाल्य भाष्यम-नमापि

कथोपम

अलम्भ-नः लम्भ-न एव । दीडि दशकुमार-चरित  
समाप्त रहितानां शब्दानामुद्गार-कथाने कुत्रापि वयं  
उदा शिल्प-नः शब्दा-स-वरमल-काराणां चमत्कार-वर्णन-स्य  
निर्करता न पश्यामः । आमान्य लोककथानां भाष्यम-न



उद्दिष्ट

अने देशकुमार चारत देशकुमार चारत काव्यालय

आमचा उद्दिष्ट कृतमालि / या शीला दोष-न अस्ति  
ना न काव्यालय न च लुब्धः, अलम्ब-य परिसरमालंकारस्य

विरोधाभासात् न कथं न च काव्यालय गद्य पद्यमात्रं / लुब्धः  
न च मदनकाव्यालय विरचित इमं प्रत्येकागकरात् प्रत्यक्ष

इत्येवमपि प्रामाण्यं अस्ति न केवलं शब्देषु अपितु  
मात्र प्रत्यक्ष अलम्ब-य उपादिभिरः लुब्धः वाशिष्ठ्यमीत

देशकुमार चारत पञ्चत-रावत कथानी माव्यमन नीत  
शास्त्रात्म शिष्टाभाप ददाति / दृष्टि यत्र आग्रह्य-रा-न

लुब्धः करोति तत्र आभासाः नारव्यमपि दर्शयति /  
देशकुमार चारत गद्य शैल्याः अनुपमः काव्यालय न केवलं

शैलीः दोष-न प्रियतमा आसीत् / आर्वः सह तत्तम  
भावा अपि नैवात्रात् प्रभावपूर्ण तथा च सामान्यः

लुब्धः शैल्या दालि / रत्नान्य निम्नक आभेद्याभ्य-शब्द-  
विभागात्-य चाकृता कल्पनाभाः उर्वरता दर्शयित्वाः

विशिष्टाः गुणाः सन्ति / दोष-न पदलालित्यस्य  
पशोना विदुः किं न लक्ष्यः अपितु अनैकशः

कलाः अस्ति / आवा शैल्या निरालय लक्ष्मीवत्  
तथा च प्रभावात्पादकता वमं पद-र पद्यमात्रं /

मया उदाहरणाय -  
क्षीणं तारं ललसन्, ओषधमो वन्द्याः न कलवन्तो वनस्पतयः

वलीया मैद्याः पशु-शिकारा पञ्चलान्, निःश्वसन्दा भल्ल  
मण्डलानि शालिलः कलभावा कालनव क्रियाः कदली मूलानि

तल्लप कुलानि इत्यादि अन्तः दोष-न पदलालित्यमीति मया  
तदानीं प्रसादिकभासीत् तथा इति-भापे- /

प्रामाण्यं



पुर्वा  
७/१०/११-५ रचना कोल प्रदर्शन ताल रचना काशी  
प्रदर्शन

3. अर्थ :- यह धर्म-विचारों के अन्तर्गत आता है।

$\frac{1}{10} = \frac{1}{10}$

६-१० ३१-१२-१९९१, तब तुलसीदास जी का जन्म हुआ था।  
 माता का नाम देवी आनंदी, पिता का नाम श्री १०८ श्री गुरुदेव

1. 1911-12: 1000  
 2. 1912-13: 1000  
 3. 1913-14: 1000  
 4. 1914-15: 1000  
 5. 1915-16: 1000  
 6. 1916-17: 1000  
 7. 1917-18: 1000  
 8. 1918-19: 1000  
 9. 1919-20: 1000  
 10. 1920-21: 1000  
 11. 1921-22: 1000  
 12. 1922-23: 1000  
 13. 1923-24: 1000  
 14. 1924-25: 1000  
 15. 1925-26: 1000  
 16. 1926-27: 1000  
 17. 1927-28: 1000  
 18. 1928-29: 1000  
 19. 1929-30: 1000  
 20. 1930-31: 1000  
 21. 1931-32: 1000  
 22. 1932-33: 1000  
 23. 1933-34: 1000  
 24. 1934-35: 1000  
 25. 1935-36: 1000  
 26. 1936-37: 1000  
 27. 1937-38: 1000  
 28. 1938-39: 1000  
 29. 1939-40: 1000  
 30. 1940-41: 1000  
 31. 1941-42: 1000  
 32. 1942-43: 1000  
 33. 1943-44: 1000  
 34. 1944-45: 1000  
 35. 1945-46: 1000  
 36. 1946-47: 1000  
 37. 1947-48: 1000  
 38. 1948-49: 1000  
 39. 1949-50: 1000  
 40. 1950-51: 1000  
 41. 1951-52: 1000  
 42. 1952-53: 1000  
 43. 1953-54: 1000  
 44. 1954-55: 1000  
 45. 1955-56: 1000  
 46. 1956-57: 1000  
 47. 1957-58: 1000  
 48. 1958-59: 1000  
 49. 1959-60: 1000  
 50. 1960-61: 1000  
 51. 1961-62: 1000  
 52. 1962-63: 1000  
 53. 1963-64: 1000  
 54. 1964-65: 1000  
 55. 1965-66: 1000  
 56. 1966-67: 1000  
 57. 1967-68: 1000  
 58. 1968-69: 1000  
 59. 1969-70: 1000  
 60. 1970-71: 1000  
 61. 1971-72: 1000  
 62. 1972-73: 1000  
 63. 1973-74: 1000  
 64. 1974-75: 1000  
 65. 1975-76: 1000  
 66. 1976-77: 1000  
 67. 1977-78: 1000  
 68. 1978-79: 1000  
 69. 1979-80: 1000  
 70. 1980-81: 1000  
 71. 1981-82: 1000  
 72. 1982-83: 1000  
 73. 1983-84: 1000  
 74. 1984-85: 1000  
 75. 1985-86: 1000  
 76. 1986-87: 1000  
 77. 1987-88: 1000  
 78. 1988-89: 1000  
 79. 1989-90: 1000  
 80. 1990-91: 1000  
 81. 1991-92: 1000  
 82. 1992-93: 1000  
 83. 1993-94: 1000  
 84. 1994-95: 1000  
 85. 1995-96: 1000  
 86. 1996-97: 1000  
 87. 1997-98: 1000  
 88. 1998-99: 1000  
 89. 1999-00: 1000  
 90. 2000-01: 1000  
 91. 2001-02: 1000  
 92. 2002-03: 1000  
 93. 2003-04: 1000  
 94. 2004-05: 1000  
 95. 2005-06: 1000  
 96. 2006-07: 1000  
 97. 2007-08: 1000  
 98. 2008-09: 1000  
 99. 2009-10: 1000  
 100. 2010-11: 1000  
 101. 2011-12: 1000  
 102. 2012-13: 1000  
 103. 2013-14: 1000  
 104. 2014-15: 1000  
 105. 2015-16: 1000  
 106. 2016-17: 1000  
 107. 2017-18: 1000  
 108. 2018-19: 1000  
 109. 2019-20: 1000  
 110. 2020-21: 1000  
 111. 2021-22: 1000  
 112. 2022-23: 1000  
 113. 2023-24: 1000  
 114. 2024-25: 1000  
 115. 2025-26: 1000  
 116. 2026-27: 1000  
 117. 2027-28: 1000  
 118. 2028-29: 1000  
 119. 2029-30: 1000  
 120. 2030-31: 1000  
 121. 2031-32: 1000  
 122. 2032-33: 1000  
 123. 2033-34: 1000  
 124. 2034-35: 1000  
 125. 2035-36: 1000  
 126. 2036-37: 1000  
 127. 2037-38: 1000  
 128. 2038-39: 1000  
 129. 2039-40: 1000  
 130. 2040-41: 1000  
 131. 2041-42: 1000  
 132. 2042-43: 1000  
 133. 2043-44: 1000  
 134. 2044-45: 1000  
 135. 2045-46: 1000  
 136. 2046-47: 1000  
 137. 2047-48: 1000  
 138. 2048-49: 1000  
 139. 2049-50: 1000  
 140. 2050-51: 1000  
 141. 2051-52: 1000  
 142. 2052-53: 1000  
 143. 2053-54: 1000  
 144. 2054-55: 1000  
 145. 2055-56: 1000  
 146. 2056-57: 1000  
 147. 2057-58: 1000  
 148. 2058-59: 1000  
 149. 2059-60: 1000  
 150. 2060-61: 1000  
 151. 2061-62: 1000  
 152. 2062-63: 1000  
 153. 2063-64: 1000  
 154. 2064-65: 1000  
 155. 2065-66: 1000  
 156. 2066-67: 1000  
 157. 2067-68: 1000  
 158. 2068-69: 1000  
 159. 2069-70: 1000  
 160. 2070-71: 1000  
 161. 2071-72: 1000  
 162. 2072-73: 1000  
 163. 2073-74: 1000  
 164. 2074-75: 1000  
 165. 2075-76: 1000  
 166. 2076-77: 1000  
 167. 2077-78: 1000  
 168. 2078-79: 1000  
 169. 2079-80: 1000  
 170. 2080-81: 1000  
 171. 2081-82: 1000  
 172. 2082-83: 1000  
 173. 2083-84: 1000  
 174. 2084-85: 1000  
 175. 2085-86: 1000  
 176. 2086-87: 1000  
 177. 2087-88: 1000  
 178. 2088-89: 1000  
 179. 2089-90: 1000  
 180. 2090-91: 1000  
 181. 2091-92: 1000  
 182. 2092-93: 1000  
 183. 2093-94:

17-1-68 42112 \* 112 512 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 103

1010-1700 1-1000 1-1000 1-1000

1010-1700 1-1000 1-1000 1-1000

१०  
 ११  
 १२  
 १३  
 १४  
 १५  
 १६  
 १७  
 १८  
 १९  
 २०  
 २१  
 २२  
 २३  
 २४  
 २५  
 २६  
 २७  
 २८  
 २९  
 ३०  
 ३१  
 ३२  
 ३३  
 ३४  
 ३५  
 ३६  
 ३७  
 ३८  
 ३९  
 ४०  
 ४१  
 ४२  
 ४३  
 ४४  
 ४५  
 ४६  
 ४७  
 ४८  
 ४९  
 ५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००

(1) यदि  $\frac{a}{b} = \frac{c}{d}$  तो  $\frac{a+c}{b+d} = \frac{a}{b}$

(2) यदि  $\frac{a}{b} = \frac{c}{d}$  तो  $\frac{a-b}{b-d} = \frac{a}{b}$

[illegible]

१. १०८०-२५ २५-१२१ ३०००००  
 २. १०८०-२५ २५-१२१ ३०००००

वक्राभावात् नान्यथापि कालेन च नान्यथापि  
अभावति नान्यथापि इति वाक्यः ३४ दाता सति

Handwritten text at the bottom of the page, likely a signature or date, is mostly illegible due to blurring and bleed-through. It appears to contain the word "Date" followed by some numbers.



2. 10/11/21 को निर्धारित लक्ष्य का 62.5% भीषण आधिकारिक

3. निर्धारित लक्ष्य का 62.5% भीषण आधिकारिक लक्ष्य का 62.5%

4. निर्धारित लक्ष्य का 62.5% भीषण आधिकारिक लक्ष्य का 62.5%

5. निर्धारित लक्ष्य का 62.5% भीषण आधिकारिक लक्ष्य का 62.5%



विनिर्दिष्ट

विनिर्दिष्ट

1  
2  
3  
4  
5  
6  
7  
8  
9  
10  
11  
12  
13  
14  
15  
16  
17  
18  
19  
20  
21  
22  
23  
24  
25  
26  
27  
28  
29  
30  
31  
32  
33  
34  
35  
36  
37  
38  
39  
40  
41  
42  
43  
44  
45  
46  
47  
48  
49  
50  
51  
52  
53  
54  
55  
56  
57  
58  
59  
60  
61  
62  
63  
64  
65  
66  
67  
68  
69  
70  
71  
72  
73  
74  
75  
76  
77  
78  
79  
80  
81  
82  
83  
84  
85  
86  
87  
88  
89  
90  
91  
92  
93  
94  
95  
96  
97  
98  
99  
100

विनिर्दिष्ट

विनिर्दिष्ट

कथा न एकं जन्मनः अपितु त्रीणि जन्मानि सम्बधिता  
 अस्ति । चन्द्रापीडस्य पुण्डरीकस्य च त्रीणि जन्मानि अत्र  
 उल्लिखितानि सन्ति । आरम्भे विदेशानुपालय शूद्रकस्य  
 परिचयः तस्य लम्बायां एका चन्द्रापीडस्य दुरा वनशम्भोः  
 इति नामकं शुकं चारुपितृणा आगच्छति । मनुजः  
 पाण्ड्याः नां शुकं उपलब्धवान् सा शूद्रा मनोरञ्जनं  
 करोति । तदनन्तरं कादम्बयाः कथा आरम्भत ।  
 चन्द्रापीडकाले द्वारा चरितस्य चन्द्रापीडस्य तथा च  
 तस्य मित्रस्य नशम्भायनस्य कथापि आदिमन्  
 आगच्छति । राजा चन्द्रापीडः दिग्विजयाय गच्छति  
 चन्द्रापीडस्य कादम्बयाः स हृदयं लब्ध्वा आलोक्य  
 आकाशवाण्या जावन्त्य जायते एतावती कथा कादम्बया  
 मिलति ।  
 काव्यकौशलः काव्यविशेषः जगत् जयम् ?  
 मन्त्राणां कादम्बयाः कथा कल्पना-प्रभृता आदि तन्मात्रे  
 ना कथा कथा भक्ति कलागव्य सङ्गीत । लम्बाक्षिकायां  
 कथानुसारण इमे कथा कल्पना गुणात्मक्यं ब्रह्मका  
 इति प्रथमतः शाही प्रवृत्ति । काण्डाया इमे कथा  
 आरम्भक रूपेण अस्त्येन विवृणोति अस्ति । कादम्बया  
 महाशिवतायाः शुकस्य च कथा चतुर शिलाया रचित  
 अस्ति । विष्णुस्य कथाया पात्राणां च चित्रे मनोरञ्जकं ॥  
 अस्ति । शुकनासस्य ५५ शः ललित-लाहिर्यस्य ३  
 अनुपमा नायः अस्ति । विष्णुना शक्यता माध्यमं २३  
 बाणेन मानव जीवनस्य नास्त्येक चित्रस्य चित्रेण



$$\frac{1}{11} \times \frac{1}{11} = \frac{1}{121}$$

अवि लक्ष

12



# मोमसंपूर्ण वारद्वय पठितव्यम् 27

यं ॥ मोहवर्ण्यं जीवनं पारिचयः तस्य काव्यात्म्यं च साक्षात्  
पारिचयः दैवः ।

उत्तरम् ॥ मोहवर्ण्यं पश्चात् संस्कृतमहाकाव्यकारेषु श्री हर्षवर्ण्य एव  
प्रथमं गवनीमभास्ति । दादश शताब्द्याः उत्तरार्द्धे श्री  
हर्षवर्ण्य नेषदाय चारुतामस महाकाव्यात्म्यं रचनां कृतौ  
मोहवर्ण्य पश्चात् कश्चिन्मोहवर्ण्य प्रारब्धः पश्चात् मोहवर्ण्य  
जातः । श्री हर्षः कान्मकुवजराजानामाः पाण्डितः आसीत्  
स्वामिना तेन लिखितमासीत् यत् ॥

→ ६१ ताम्रवल्ग्वयमासने च लभते यः कान्मकुवज-श्वरात्  
मोहवर्ण्यं तन्मोहवर्ण्य कान्मकुवजराजः राजा विजयचन्द्रः उद्योग  
जगत्तन्मोहवर्ण्य आसीत् । अतः अनेन प्रमाणेन मोहवर्ण्य  
समयः दादश शताब्द्याः उत्तरार्द्धे एव स्थापितः ।  
कान्मकुवजराजः महाकाव्यात्म्यं कृतौ लभते यत् पितुः नाम श्री हर्ष  
तन्मोहवर्ण्य ज्ञातुः नाम गामवल्ग्वय इति निरूप्यमासीत् ।  
संस्कृत-याः किम्बदन्त्याः अनुसारेण श्री हर्षवर्ण्य  
पितुः नेषदायकेन उद्योग-वार्त्तने उद्योग-वार्त्तने लभ  
शास्त्राद्यभभवत् । तस्मिन् हर्षवर्ण्य पिता पराजयं  
प्राप्तवान् । मृत्युं पश्यन् तस्मिन् तस्य मनसि प्रतिशोधस्य  
भावना आसीत् । परन्तु सः किमपि कर्तुं न आशक्तवान् ।  
अरणात् पूर्वं पिता तां धरणां पुत्रस्य लभक्षे स्थापितम्  
श्री हर्षवर्ण्य गङ्गातीरे गत्वा वन्येन्तामोह ७ इति मन्त्रस्य  
वर्षं पश्यन् जापं कृत्वा अगवल्ग्वय त्रिपुरस्य वरदानेन  
अपराजयं पाण्डित्यं लब्धवान् । पितुः कथानुसारेण  
उद्योग-वार्त्तने मोहवर्ण्य मोहवर्ण्य स्वर्ण-स्वर्ण-स्वर्ण

स्वाधितव्यम्



तावद् आभारवेर्भाति यावन्माद्यस्य नोदयः  
उदिते नैषद्ये तावत्, एवं गाढा एवं च आरतिः)



कालंकाराणां गुणं कतिनां च प्रयोगः काव्ये लोच्यते  
 नक्षत्राद्येषु काव्ये दुर्बिलानां कल्पना न भवेत्कदापि  
 भवति । इदं महाकाव्यं लोच्यते लाहरी अमरतल्ल  
 प्राप्नोत । नक्षत्राद्येषु चरितेभ्यः लोच्यते काव्येषु नील-  
 रथा न परन्तु काव्ये काव्यादिभिरिति यत् कविद्वयः  
 नित्यं प्राप्तेभ्यः दुर्बलप्रयोगः कृतोऽस्ति । पूर्ववत्तानां  
 कृताणां प्रभावः तादृमन् महाकाव्यं लोच्यते दृश्यते ।  
 इदं महाकाव्येषु शृंगार लाहरी अमरतल्ल च-द्रमा  
 अस्ति । अन्य महाकाव्यान् पण्डितलमात्रे लम्बानां च  
 लम्बानां भवति । इदमपि जनाः वदन्ति यत् मम्मटः इमं  
 गु-यमवलोक्य व्याजान्तरिः नामकाव्यं कालंकाराद्य  
 ग्राह्यमेव उक्तवान् यत् आदिमन् महाकाव्यं  
 काव्यगताः नैव दोषाः लान्ति । यथापि पण्डितल्ल  
 प्रदर्शनां तादृमन् काले लम्बानां मुख्यं अपेक्ष  
 व्याप्ति-तदनुसारं एव कविद्वयः एतादृशमभूत्  
 पूर्व काव्ये रचयितमास्ति ।  
 (अन्य महाकाव्यान् अनेकेषु लिङ्गेषु अनेकेषां  
 काव्यकाराणां दाशिकीकानां उपहासः कृतः दृश्यते)  
 इत्येव नामकाव्यं कालंकाराद्य प्रयोगः स्त्री हर्षल्ल  
 प्राप्तिः लान्ति आदितीयमास्ति । महाकाव्यान्  
 यथादृशः लिङ्ग इमं मन्त्याः विवाहप्रलङ्घ इत्येषल्ल  
 ग्राह्यमेव पश्य जलानां चरितं मिलति । अन्मरापि  
 इत्येषल्ल उदाहरणानि मिलन्ति एव ।

अतः आलक्ष्यमा, कालंकारदृष्ट्या, शब्दरचनादृष्ट्या,

कालंकारः



इहं महाकाव्यमनुपममालि- १ ॥ १॥ १॥ १॥ १॥  
मात्रं, दशमं वाचस्पत्यं अपि अनुपमा ॥ १॥ १॥ १॥ १॥  
अ-१॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥  
न पद्यं विदुः अपि धामिनि ललितं लोचनं च ॥

आलि-  
✓



५०१७. मुक्ताद्याः जीवनं ब्रह्म पदस्य लङ्कृत गद्य जाहेत्ये तस्य  
 रचयिताः ज्ञान निश्चरणं हिमताम् ?  
 प्रारम्भः प्रागेण लोकोक्तं कवीनां इयं कारणं आनीत मत्तले  
 लोकार्थस्य देत्वा लोकोक्तं लोमां लङ्कृतं चित्तं न  
 अनुरक्तं न । वायुध्वजं कुरुष्वकमेनेन विचारणं त  
 विरचयन्त आनीत विरचयं च तेषां आनीत ।  
 अनन्यमा जीवनमा लुब्धः आपि लोकोक्तं लोकोक्तं  
 विरचयं न किञ्चिदापि उक्तवान् । कारणम् कादम्बरि  
 लुब्धः शब्दाः अनुकरणं करोति । अनन्यं लुब्धः  
 वाचयन्तं पूर्ववत् इत्येतत् । ह्यचार्यं चणनं लुब्धः  
 लुब्धः वाचयन्तं । उल्लेख्याऽपि कृतः । नामनीन  
 लोकोक्तं लोकोक्तं ग्रन्थे वाचयन्तं । उदाहरणानि  
 लोकोक्तानि लोकोक्तं । वाचयन्तः शब्दा लोकोक्तं  
 प्राकृतकाव्ये लोकोक्तं इति ग्रन्थे लुब्धः उल्लेखं  
 तु कृतवान् परन्तु न वाचयन्तः । अनन्यं इदं स्पष्टं  
 अवाति मत्तं अष्टमं गतावधमा मध्यकालिको इति  
 काव्ये लुब्धः प्रागेण तु जानाति लोकोक्तं परन्तु तदा  
 वाचयन्तं प्रागेण लोकोक्तं जानाति । अनन्यं कारणं  
 लोकोक्तं प्रमाणानामाधारेण लुब्धः कालः वाचयन्तं  
 अनन्यं एव निश्चयं शक्नोति ।

रचयिताः  
 लुब्धः लोकोक्तं गद्यकाव्यमाहृतं  
 वाचयन्तं । इदं गद्यकाव्यं लुब्धः मानसिकं  
 उदाहरणं आहृतं । लोकोक्तं चित्तमाणिपुत्रं कन्दर्प-



केतुः स्वप्ने एकाग्रानुपगा पश्यति । स्वप्नेत्रय  
 मकरन्दनं सह तां अपारिचिता सुन्दरीमन्वष्टु सुखत-  
 वाहगच्छति । विन्द्यपर्वतः सः एक द्वयं पश्यति यत्  
 शुक्लं पत्नी राज्ञः पीतं प्रताडयति । शुक्लं वाताप्रलम्बं  
 सः जानाति यत् मया सः तां कन्यां हृष्टुं व्याकुलहृत्तयं  
 ना कन्या अपि तं अनवलाभितुं नयति ।  
 नागवदतायाः पिता तान् विवाहं अपरं राक्षसमारु  
 सह कर्तुं चच्छति प्रमा युगलं सुखत विन्द्या-चल  
 प्रस गच्छति । राज युगलं निद्रा भग्नं गच्छति ।  
 प्रामातृतायाः राक्षसमारु नागवदता न पश्यति  
 आकाशवायुः माध्यामन तमापुनः मिलनम् उदयान-  
 भवति । लुब्धुः लुब्धुः मीनस्य द्वयं वर्णनानां मीनानां  
 द्वारा कथा-प्रमादित्वं करोति । यद्वापि आत्मन-  
 गच्छ कल्पे कथा-प्रमादित्वं व्यत्यत । अनन्ति परन्तु  
 वर्णनं विस्तृतमस्ति । लुब्धुः अनेक विषयानां  
 ज्ञाता ज्ञाती । अतः तेन श्लेषद्वारा उपमा द्वारा च  
 लोकोः कार्यं श्रुतिमस्ति । तस्य प्रतीक्षा ज्ञाती  
 प्रत्यक्षं श्लेषमयम् । अन्याः प्रतीक्षायां तेन आद्येन  
 पालनं कृतम् । श्लेष-य विरोधात् प्रालम्ब्य च माध्यमेन  
 तस्य कल्पे दुर्गता अपि उगता अलंकाराणां लभानां  
 लीला तेन अनेक लक्ष्येषु अतिश्रान्ता लुब्धुः  
 गच्छता वनायेत दौषमुक्ता अपि श्रुता गुणसम्भ-ना  
 अस्ति । प्रामेय अनेक आलोचकाः अल्प-प्र-प्रत्य  
 सुखतायाः कारणं आलोचकां तत् कल्पे कथनीय

उदयान  
 उदयान



मन्थन्ते परन्तु यदा सा लभानशैलानां शिखरानां त्रयाण  
 कारात् तत्र तल्य गद्य मन्थारके भवति । अथा  
 'लुका-त का-तमात । मन्दमादमपचन वाव्याविन्दुन ।  
 प्राथम्यालङ्कृत प्राथके । तन्चारय निनालिनदलतालवृत्ते-  
 नोद्गतात् । एहि भगवति निद्र अनुग्रहात् माम् ,  
 दिक्म डान्द्रपरः । अथादि उक्त गद्यकाराणां शैल्या  
 तत्र प्रथमं लुका-तमात । तन्चारय निनालिनदलतालवृत्ते  
 तत्र गद्यकाव्येन प्रभावितः लक्षितः सति ।

प्र० १८ आम्बिकादत्त व्यासनाथं संक्षिप्त परिचयं दत्वा तल्य  
 अमर कृतिः शिवराजा विद्यामोधुनिक भुगत्य शेष  
 गद्यकाव्यमात्रं स्वतन्त्रं अङ्गीकृतः ।

उत्तरम् :- प्रथमं संस्कृत गद्यक्षेत्रे स्तादृशाः कवयः न अभवन्  
 येषां गणना शेष गद्यकारेषु भवति । अनेक शताब्दा  
 परितः संस्कृत गद्य लेखन-विशेष विराम एव अलगतः  
 एतादृश-शताब्दमां आत्मन क्षेत्रे गद्यकारेषु स्व-  
 मुल्लेखनीयं नाम अस्ति । आम्बिकादत्त व्यासः ।

आम्बिकादत्त व्यासः स्व ग्रन्थेषु प्रस्तावनायां व्यास  
 परिचयमददात् । कथावाचका आम्बिकादत्त व्यासः  
 लज्जावन्तः प्रारम्भे अनेकेषां कव्यानां अनुभवमकरोत्  
 तल्य प्रवृत्ताः जामपुर राजमल्य निवासीनां आसीत् ।  
 काता-१ । तदनन्तरं तत् तत् आगत्य काश्यामवलम्ब  
 तत्रैव आम्बिकादत्त व्यासनाथ शिक्षा दीक्षा जाता ।  
 लाहत्याचार्यस्य उपाधिवारा आम्बिकादत्त व्यासः  
 विहार प्राप्ते राजाकोशे संस्कृत महाविद्यालये प्राध्यापक

नल

व्यासः



६६२२/२१ दिनांक

कार्यमकरात् । आभिककादिकमात्रं बहुभूषणं  
 प्रतिभासाः दाना आलात । संस्कृतेन सह हि-दी भाषायाः  
 काः भाषायाः अनादृत्य भाषायाः उन्नेषि लः प्रकाशं पठितं  
 आनीत । लेखनं कला तं हि-दी वरद-य वरदानमासीत्  
 हि-दी भाषायाः संस्कृतं भाषायाः तं पञ्च ललितं  
 रचना रचिताः । विहारं प्राप्तं एव संस्कृतं लेखनी  
 ललाटालं रचनायाः कला आनीतं संस्कृतं लेखनी  
 एव ललितं जीवनं उद्देश्यमासीत् । शिवराजविजय  
 रचनाः

इदं मन्त्राभिः प्रथमं उक्तं यत् आभिककादिकं

कामान्तरं पञ्चललितं रचना आनीत । परंतु ललितं  
 ज्ञानेन शिवराजविजये एव निराश आसीत् । तं दृष्ट्वा  
 शिवराजं गद्यभाषायां जीवनं चित्रं तस्मिन् गद्यभाषायां  
 चक्रमेत । स्वदेशे निश्वासेषु रचितं आभिककादिकं  
 गद्यभाषायां कारते स्वातन्त्र्यं लेखनाय जनजागरणं  
 तं लाभ्यता दत्ता । आभिककादिकं गद्यभाषायां  
 इदं प्रतिभासाः लाभ-जालमासीत् । अन्यं कालमात्रं  
 नाममात्रं शिवराजं आभिककादिकं नाम नृपमभुदाक्षरमासीत्  
 ६६२२ वा लाभ्यते देहं वा पातयेत् न शिवराजं इदं  
 पालेता दृष्टिमात्रं आसीत् । तं न च इदं पालेता  
 आभिककादिकं पालेता । शिवराजविजये शिवराजं  
 उद्देश्यं चारितं नमः पालयेत् पञ्चमात्रं । अन्यं  
 गद्यभाषायां प्रधानं रत्नं नमः पालयेत् । परंतु तं  
 रत्नं सह उन्नेषि रत्नाः आभिककादिकं रत्नमा

कृष्ण

हृदय



वर्धयन्ति । यदि वयं इदं गणाम् भवति वारं वारं  
आदितीयादि काव्यं तर्हि नास्ति अत्राशयान्वितम् ।

अथा -

हरहर महादेव ३ गगनपुराण १६३-६४ - १३१-६४ अथ  
विषाद-इति कौलहल सन्ध्याना च वन्दुदातव्य-अन्तर्दि  
पारलम्पदभक्तः कलकलौ रोदन्ति लम्पूरयत ।

शिवराज विजायास्य अथा उवाच ना-दय प्राप्नोत ।  
निरलाना प्रचालिताना शब्दाना माध्यामेन अतिविक्रदा  
काला इह काव्यं नव लम्प-नमकरोत । उत्सुकता  
एवं विजाया अत्र काव्यस्य विशेषता अस्ति ।

पाठकः अनेन निश्चितदर्पण प्रभावितः भवति ।  
अलङ्काराणां व्यापारिके दृष्टा-काव्यस्य लक्ष्यं वर्धयति ।

अथाणा गुणानां तिल्लुणां शीतानां प्रयोगः अस्मिन्  
काव्ये लक्ष्मणेय उत्पादयति । अनुप्रासस्य इयं  
दृष्टा कला नाना न दृशति । अथा -

फल-परलाऽऽल्पाद चपालत-चञ्चु-पतङ्ग-कुलङ्क  
गणान्तिक-विनत-शाख-शाखि-लम्पूह-व्याल ।  
तु-दर क-दरः पर्वत खण्डः अस्मिन् ।

इति प्रकारेण काव्यनिरूपणं अथ  
आदितीयादि काव्यः इति वक्तुं शक्यते ।

अथ  
अथा

विजाया



पृ० १५ | आरवेः माधव्यं च तुलना कथिः २

उत्तरम् :- किं लोकेन महाकाव्य परम्परामां महत्त्वमां आरवेः

माधव्यं च त्रिभिः महत्त्वपूर्णमिति । अत्र आदिना

उत्तरं नये द्युमाः कलायाः परम्परं तुलनां पश्यामः ।

उत्तरम् । महाकाव्यकारा द्युमा महाकाव्यमां प्रालिङ्गितः लोकेन-

लोकेन अनुपमां कलां नये लयेः कतिपयाः तुलनाः

अप्युपमाः ।

(१) द्युमाः कलायाः महाकाव्यमां कथां लोकेन महाभारतेन  
लोकालोच्यते ।

(२) द्युमाः प्रथमाः आरम्भः शिवदत्तं अवाति अत्र ।  
किराताजीनां आरम्भः ६६ क्रि. पू. कुक्षामादिपद्यु पालिनी ११  
माधव्यं प्रथमः आरम्भः अनेन प्रकारेण क्रि. पू. पति स्नामिति  
शास्त्रे तुल्यतः -

३ किराताजीनां प्रथमं लगे वने-चरः द्युमाद्यनल्य रक्षितः

आगत्य युधिष्ठिरं पति लोकेन अवाति कथापित्वा

द्वयं कथां करोति माधव्यं काव्यशिशुपालवद्यै नारदः

आगत्य तादृशमेव लोकेन कथां श्रावति ।

५ किराताजीनां द्वितीयं लगे युधिष्ठिरं आगत्य  
पद्युमाः च अवाति राजनीति विषयकः संवादः अवान्ति ।

शिशुपाल वधाय द्वितीयं लगेऽपि कलराजस्य श्रीकृष्णाय

उद्युक्तं च मध्ये एकमेवमुदाविषयेऽपि परामर्शः अवाति ।

५ किराते महाकाव्ये वदन्ति आगत्य पाण्डवानां भाग

दशानं करोति तस्य कथां लोकेन एव अर्जुनाः इ-ह काल

पर्वतं गत्वा शिवस्य आराधनां करोति । माधव्यं काव्यं नारदः



- द्वारा एतादृशः एव उपदेशः दत्तोऽस्ति ।
6. किराते अङ्गुनाः इ-द्वकालपर्वतं गत्वा तपस्यां करोति ।  
शिशुपालं वधे श्री कृष्णः रैवतं पर्वतं विनामं करोति ।
7. किराते ममन्तारंकारण्य माध्यमेन हिमालयस्य वर्णनमस्ति ।  
एतादृशमेव वर्णनं माध्यमकाव्ये रैवतं पर्वतस्यैव अस्ति ।
8. द्वयोः महाकाव्ययोः अन्तरत्वा विचारवर्णनस्य  
वासुदेववर्णनमस्ति ।
9. किराते किरातवेषधारी शिवः अङ्गुनमपमानाभितुं द्रुतं  
प्रययाति । गाढकाव्ये शिशुपालः कृष्णस्य अनादरात्  
द्रुतवेषधारी करोति ।
10. किराते अङ्गुनस्य किरातरूपधारिणः शिवस्य वादविवादो  
भवति माध्यमकाव्ये शिशुपालः द्रुतस्य लातधर्किना मध्ये  
एतादृशं विवादं वधे पश्यामः ।
11. किरातस्य पञ्चदशतमे लग्ने शिशुपालवधस्य एकादशतमे  
लग्ने अन्येन कव्येद्वारा युद्धं वर्णनमस्ति ।
12. द्वयोः काव्ययोः प्रमादयस्य, सन्दादयस्य वाचः ~~सन्ध्याकालस्य~~  
चतुर्था प्रकाशविभिनने दृश्याणां अथाख्याने वर्णनमस्ति ।
13. आरविः स्वकाव्यस्य अतिरिक्तस्य अन्तिमपदे किराता  
इति शब्दस्य प्रयोगं करोति तु गाढः इति लग्नान्ते श्री  
इति शब्दस्य प्रयोगः करोति ।
14. द्वयोः वर्णनं केन समानता अस्ति ।
15. द्वयोः काव्ययोः अन्तः पूर्व विनासु लेख्ये वर्णित  
अता एतया समानतानां कारणेन अपि द्वयोः महाकाव्ययोः  
प्रमाणं स्वकीयं महत्त्वमस्ति ।



भाद्रशः चामत्कारः आरविः काव्ये नमः अलम्भायः  
 उपर्युक्तं भाव्य काव्येऽपि तथापि । भाव्य आरवेः कृतम्  
 आहृत । भाव्यः तस्य काव्यमात्रं अनेनानेन भवति  
 आत्मानं । तत्त्वव्य कारणं भाव्य-काव्य आरवेः काव्यमात्रं  
 उच्यते तस्यैव प्रामाण्यं इति कतिपयानां मता चान्यानां  
 मतं नास्ति तथापि आहृतं एव नव्यं लगे गतं भाव्यं नव्यं शब्दो  
 न विद्यते । अथवा एव तावद् भा आरवि आहृतः भाव्य  
 भाव्यस्य नैदधः । अथा भाव्यं भावे लूयनेनैव शीतलाः  
 अवाप्ति तस्यैव भाव्य काव्यसमक्षं आरवि काव्यं प्रभाहीनीम्  
 तथापि द्वयोः महत्तमं भिन्नं-२ एव । किन्त्य प्रीतिः  
 द्वितीयेन सम्भवा नास्ति ।

प्रभाहीनं

प्र०२० कालिदासस्य अवधूतस्य नारदकेयुः सुप्रभा तुलनाकाव्ये  
 उत्तरम् कालिदासः प्रीति-सम्पन्नः निष्कृतं लाहल्यस्य कलाकर्म  
 तस्य लेखनी अथा महाकाव्यस्यैव रचयत तथा त्रीणि  
 नारकानि अपि तथा एव लेखन्मा निष्पादितानि सन्ति ।  
 निष्कृतं नारकं द्वेन या प्रामाण्यं कालिदासस्य आहृतं  
 तादृशी एव अवधूतः दृश्यते । अत्र इदानीं वयमभिष्ट  
 प्रेने द्वयोः नारककारयोः तुलनात्मकं रूपं प्रशयागः ।  
 तथाः द्वयोः कवयोः तुलना अनेन प्रकारेण दृष्टुं शक्यते

(1) कालिदासः त्रयाणां नारकानां रचयतां कृतवान् तथा एव  
 त्रीणि नारकानि अवधूतः रचितानि सन्ति ।

2 कालिदासस्य त्रिषु नारकेषु तादृशी प्रामाण्यं शाकुन्तलस्य  
 आहृतं तादृशी अवधूतः उत्तरराम-चरितस्य वर्तते ।  
 3 कालिदासस्य शाकुन्तल महाभारतात् लेशहीनमाहृतं



भवभूतः य उतर राग-चारितं वाग्मात्रं रामयणाल-  
संश्रुतमस्ति ।

4  
यादृशी कालिदासेन शाकुन्तले (अन्य नारकेषु न्येष्टुं शक्यं) रत्नल-  
य अनुपमा दृश्य प्रदर्शिता तादृशी रत्नल दृश्य भवभूतः  
उतर राग-चारितेऽपि अस्ति परन्तु तत्र च न्येष्टुं शक्यं  
आपत्ता कक्षा रत्नलयाधेनै पश्यामः ।

5  
कालिदासस्य नारकेषु प्रकृति निरूपणस्य अनुपमता  
दृश्यते तथा च भवभूतः नारकेषु प्रकृति निरूप-  
णस्य दृश्यते ।

6  
कालिदासस्य नारकेषु प्रथम-तः शृङ्गारस्य कामुकता  
दृश्यते परन्तु तदनन्तरं वियोग दुःखाभां विशद-  
यित्वा शृङ्गरेण द्यारयति ।

7  
कालिदासस्य नारकेषु व्यञ्जना-शक्त्याः ~~विशेषः~~ <sup>आधिक्यमस्ति</sup>  
तत्र भवभूतः नारकेषु व्यञ्जनानां तत्र वाच्यार्थ-रूपेण  
लुप्तानि प्रयोगं वर्यं पश्यामः ।

8  
अत्र कालिदासः लीलितानां शब्दानां माधुर्यमेव  
विशेषं ग्राह्यमाभिव्यक्त्यै करोति तत्र तादृशी  
आभिव्यक्ति भवभूतः नारकेष्वपि दृश्यते ।

9  
उपमाकाराणां प्रयोगं कालिदासस्य (उपमा) दृष्ट्या विदुः  
अस्ति । भवभूतः उपमाकारे निबन्धनं दृश्यते  
यत् भवभूतः मूलस्य उपमां अभूतं करोति ।

10  
कालिदासस्य (उपमा) न्यायिकानाम् (प्रत्यक्षानामुपमा)  
दृश्यते परन्तु भवभूतः केवलं न्यायिकानां गुणानाम्  
उपमां करोति ।



11) कालिदासस्य अवभृतरश्च नाटकेषु नायिका वर्णने  
 1) अन्तर्दृश्यते । कालिदासस्य नायिकानां वाह्य  
 2) निन्दयस्य मनोहारकं चित्रणमस्ति परन्तु अवभृतेः  
 नायिकानां मन्तः ११ ८१ निन्दयस्य प्रकाशितं करोति ।

12) कालिदासः यत्र कुत्रापि यत्कृच्छ्यापि चित्रणं करोति  
 तस्य चित्रणं लज्जीवता मिलति स च लज्जाति यत् वर्णनीयस्य  
 पात्रस्य लाजात रूपेण उपलभ्यते भवति । परन्तु अवभृतेः  
 वाह्य निन्दय महत्वं न दत्त्वा अन्तर्दृश्य उपलब्धं  
 निन्दयस्य लज्जीवता दृश्यते । परन्तु कालिदासवत्  
 न्वा नायिकास्य तत्र न दृश्यते ।

13) कला दृष्ट्या दृश्यो गद्य लज्जा विषमता दृश्यते ।  
 कालिदासस्य भाषा यत्र लज्जा कौमला न्वा नायिका  
 ललितपदावली युक्तं अस्ति तत्र अवभृतेः भाषा  
 दाशानिभूतया परिपूर्णं कमलाद्या प्रगल्भा स्वं प्रौढा  
 अस्ति । यत्र कालिदासः लोक प्रचलितानां शब्दानां  
 लज्जकाङ्क्षितं तत्र अवभृतेः पाण्डित्य प्रदर्शने विशलभ्यते ।  
 14) कालिदासः प्रहसि मानवीकरणं करोति तस्याः कमनीयता  
 सर्वत्र विद्यमाना भवति । अवभृतेः चित्रणमापि  
 यत्र पश्यामः परन्तु तत्र कालिदासवत् सुगमता  
 नास्ति । अवभृतेः पृथग् हीनमल्य वर्णनं सुन्दरता  
 करोति ।

15) पुरुषपात्रस्य चित्रणे कालिदासः अत्र तं पदं मानवीय-  
 त्वं युक्तं दर्शयति तत्र अवभृतेः पात्रेषु सर्वत्र आदर्शः  
 एव दृश्यते ।

पुस्तक संरक्षण  
 पुस्तक संरक्षण  
 पुस्तक संरक्षण  
 पुस्तक संरक्षण



16

हवाभाविकता यादृशी कालिकालान्तरं नास्ति ननु दुश्प्रयत्ने  
तादृशी अवस्थितः नास्ति न वयं पश्यामः ।

अतः हिमाः कालिकारथाः मध्ये मत्र उत्तरेकाः लभ्यन्ते  
नानि तत्र वैषम्यापि वयं पश्यामः । परन्तु दुश्प्रयत्ने  
कालिकारथाः कालिकारथाः लिखितं नास्ति पुष्पितं चालि  
-नानि ।

पु० २१

महाभारतस्य रचना कालः कथं विषयस्य न्य लभ्यते  
आलोच्यनात्मकः उत्तरं देयम् ।

उत्तरम् :- रागायणस्य पश्चात् लिखितं साहित्यं महाभारतस्य  
लगातः आन्तरप्रकारं दृश्यते अथ ग्रन्थः विशिष्टः  
ग्रन्थेषु निः विशालतमः अस्ति । अन्य रचयिता  
कृष्ण दूपायनाः वेद व्यासोऽस्ति । ग्रन्थोऽस्ति नूनं एक-  
लक्षे अनुष्टुप छन्दोऽत्मके अपि वयं पश्यामः ।  
अन्य ग्रन्थस्य अस्ति इतः लाहरी लिखितं इति  
प्रमाणं अस्ति । अन्य ग्रन्थस्य कालः लभ्यते  
विदुषामनेकानि मतानि सन्ति । कतिपयानां तु इदं  
कथनं अस्ति अतः इमे रचना एकलक्षेण कालस्य  
एकस्य कवि द्वारा रचितः अस्ति । परन्तु केचन विद्वानः  
अन्य विशालतमं अपि दृश्यते अन्य मतस्य  
लभ्यते नानि यत् लभ्यते-२ विभिन्न कवीनां  
लेखकानां - यः माध्यमेन अन्य आन्तरप्रकारं  
दृष्टुं जाता । तेषामेवमपि कथनं अस्ति यत् यावत्  
दृश्यते कलादृश्यते न्य अनेक लक्षणेषु परिवर्तनं  
दृश्यते । महाभारतस्य पूर्व नाम उग्रः कालीतः ।

कविः

पु० २२



अस्य संस्कृतं ग्रन्थस्यारम्भे एव दृश्यते पद-तु तदानीं  
 अल्पं ग्रन्थं श्लोकं लेख्यं अल्पं अप्याशीति  
 लक्ष्मिभिर्भाष्यं आसीत् । कालान्तरे अल्पं नाम महाभारत  
 नाम्नात्तम् । उक्तं महाभारतस्य कलां वक्तव्यं इति  
 हिमः लक्ष्म-स्ये कनधुनापि एकं गतं नीत्वा महाभारतस्य  
 गतं सपे नयामदानीं पञ्चमः । तस्य रचना ईशात्  
 त्रि लक्षसु वर्षे पूर्वमेभवत् । महाभारतस्य उत्तरे अंशाः  
 वदन्त्यापि दृश्यन्ते । अतः इयं रचना लक्ष्मण द्वय्या  
 लक्ष्मण्य कोटि । कतिपयानामिदं कथनं यत् महाभारत  
 मानि कथानकानि सन्ति तत्र अनन्ता अपि दृश्यन्ते ।  
 आषट्कं एवम् विगच्छादयं ग्रन्थः पञ्चदशोऽयं  
 कौरव पाण्डवानाञ्च विस्तृतं वर्णनं दृश्यते कनगति  
 गथा आदि पूर्व कौरव पाण्डवानामुत्थातः द्वितीये द्यूतक्रीडा  
 तृतीये पाण्डवानां वन-वासाः तृतीयेऽपि वनवासाश्च  
 चत्वारि उत्थानाः चतुर्थे पाण्डवानाम्भ्रातृवासाः पञ्चमे  
 द्रुपदपुत्रे कौरवपाण्डवानां समाश्रयं गमनं शान्ताः  
 पुत्राः । षष्ठे अर्जुनाय गीतायाः उपदेशः भूयः सप्तमे  
 भीष्माय च दूतः सप्तमे आभिमन्युः वधः अष्टमे  
 कर्णस्य वधः नृपः तथा च तस्य वधः नवमे शल्यास्य  
 उद्धिगतायां पुरु दशमे द्रुपदस्य वधः एकादशे  
 अपि च द्वादशे द्रुपदस्य वधः त्रयोदशे भीष्मस्य वधः  
 उपदेशः चतुर्दशे द्रुपदस्य वधः पञ्चदशे भीष्मस्य वधः  
 षष्ठ्याऽपि अश्वमेधयज्ञः पञ्चदशे भीष्मस्य वधः  
 निहतं द्यूतराज्याय नानाप्रकारे प्रवेशः । षष्ठ्ये  
 षोडशे

पञ्चमी

१०  
११  
१२  
१३  
१४  
१५  
१६  
१७  
१८  
१९  
२०  
२१  
२२  
२३  
२४  
२५  
२६  
२७  
२८  
२९  
३०  
३१  
३२  
३३  
३४  
३५  
३६  
३७  
३८  
३९  
४०  
४१  
४२  
४३  
४४  
४५  
४६  
४७  
४८  
४९  
५०  
५१  
५२  
५३  
५४  
५५  
५६  
५७  
५८  
५९  
६०  
६१  
६२  
६३  
६४  
६५  
६६  
६७  
६८  
६९  
७०  
७१  
७२  
७३  
७४  
७५  
७६  
७७  
७८  
७९  
८०  
८१  
८२  
८३  
८४  
८५  
८६  
८७  
८८  
८९  
९०  
९१  
९२  
९३  
९४  
९५  
९६  
९७  
९८  
९९  
१००







प्र० २२ नाटककारेषु आत्मन्येनानि निधारयामु ?  
 उत्तरम् :- विशाले वितावत्तमाः प्रारम्भे भावतु विदुषाभिर्द्वयं  
 गान्धर्व कानात् यत् महाकाविः कालिदासः एव  
 लल्लुक्तं लाहिल्यं प्रथमं नाटककारोऽस्ति । परन्तु  
 विदुषा मेकः नैव महाभागः क्वापि लोकोपे ३-४  
 ६६ लल्लुक्तं लाहिल्यं इति हस्ति ११ अहमेव मतस्य  
 निगमनमकरोत् । परन्तु तस्मिन्नेव काले श्रीगणपति-  
 शास्त्रो द्वारा गान्धर्व रचितानि त्रयोदश कृपकानां पाठः  
 द्वि (लिपयः लब्धाः । तेन च वस्तुस्थिते लब्धे  
 निगमे एतादृशी ज्ञाता यत् एतानि त्रयोदशनाटकानि  
 गान्धर्व रचितानि एव सन्ति । तेषां च रचनाकालः  
 कालिदासात् पूर्वमास्ति । यद्यपि गान्धर्व रचितानि  
 नाटकानि लल्लुक्तानि सन्ति परन्तु तेषां लिपि  
 आधारः पौराणिकोऽस्ति शमायणान् कथानुक्रमित्य  
 प्रतिगा तथा च आभिषेकमैत्रि द्वयोः नाटकाः  
 रचना जाता । महाभारतस्य कथानुक्रमे आदाय  
 काले चारितं पंचरात्रं मध्यमं व्याभागः कृतवाच्यं  
 कृतं दशरत्नं कर्णधारः दुर्गभंगमैत्रि सन्ति ।  
 नाटक-उद्भवनं लम्बाद्यतनं कथानुक्रमेण लल्लुक्तं  
 युक्तं भागधारयामि नाटकं द्वयोः अस्ति । तथा च  
 आवधारके दारिद्र्यपाकदत्तमैत्रि द्वयोः कथानुक्रमे  
 काव्यतमेपकमैत्रि । वस्तुतः लल्लुक्तं लल्लुक्तं लल्लुक्तं  
 तस्य प्रतिद्वं नाटकमस्ति । अन्यानि तु लल्लुक्तं  
 लल्लुक्तं इति अपेक्षया आर्द्धावतराणि सन्ति ।  
 गान्धर्व-कथा-वस्तु-विशाले पात्राणां चारितं चित्रणं  
 प्रतिगा-लम्पना नाटककारोऽस्ति । तस्य नाटकानां  
 अनुशीलनेन इदं स्पष्टं भवति यत् तस्य  
 नाटकाणां कथा-वस्तु-नाटकमैत्रिनां कथावस्तु-  
 नाटकाणां कथा-वस्तु-नाटकमैत्रिनां कथावस्तु-  
 नाटकाणां कथा-वस्तु-नाटकमैत्रिनां कथावस्तु-







महाकाव्यं तथा च तस्य कालः पताकायाः आधाराभूतः।  
 ग्रन्थः काव्यमीमांसा इति । नामानुसारेण काव्यमीमांसा  
 इति ग्रन्थे काव्यस्य भीमाभावात् अर्थात् अनीलाभ्या  
 अस्ति । अनीलाभ्यायां राजाशेखरः काव्यस्य काव्य-  
 पुरुषरूपं उल्लेखः कृतोऽस्ति । प्राप्तप्रमाणानामाधा-  
 रं राजाशेखरस्य लभ्याः दशम शताब्द्याः प्रारम्भः  
 अस्ति । स्वयं च तेन स्वकीयेषु ग्रन्थेषु विपरिचयः  
 करोति । तदनुसारेण तस्य जन्म महाराष्ट्रस्य  
 यामावारु नामकः इति क्षत्रियजातौ अभवत् । पितुः  
 नाम दुर्दक के माता च शीलवती अस्ति ।  
 तस्य प्रवर्ज्य अन्ये यशस्विनाः विद्वान् आसन् ।  
 चाहासक वदन्ते अवातलुंदरी इति नामग्रन्थे  
 गहिष्मणा सह तस्य विवाहः अभवत् । महाराष्ट्र-  
 लम्ब्या काव्यकुण्डलमगरे एव अस्य जन्म मापितम् ।  
 तस्य कालभारत कालराभाषा च द्वे विशालकावे  
 नाटके स्तः । भवन्तु इदानीं अस्य भारतस्य अ लम्बिएः  
 शेष राजाशेखरस्य नाट्य कला काव्यकला च  
 लम्ब्या अस्ति । काव्य भीमाभाया काव्य पुरुषस्य  
 कल्पना तस्य नूतना दृष्टिना अस्ति काव्य भीमाभाया  
 भरा काव्यास्य विस्तृतः उल्लेखः तत्र लम्ब्यानामलम्ब्या-  
 ना कवीनां विवरणमपि अस्माभिः लभ्यते । तस्य  
 नाटकेषु हास्य रसस्य न्यूनता नाट्य कालस्य  
 अभावः दृश्यते ।

प्र०२५ संस्कृत साहित्ये कथा साहित्यस्य विकासक्रमः  
 उत्तरम् - संस्कृत साहित्ये आख्यायिका साहित्ये कथा  
 साहित्ये च इति द्वयोर्मध्ये प्रथमतः स्थापनास्य  
 प्रमाणं अनेके विद्वद्विः कृतम् । काण अस्ति प्रथमं  
 केनापि द्वयोर्मध्ये लघु रूपं भेदा प्रदर्शितः । यथापि  
 आमाह द्वारा काव्यलकारे द्वयोर्मध्ये भेदप्रदर्शनं हेतुमास्ति



यत् यत्र आख्यायिका वा लघु किंवा कथा  
 भवति, तस्य लघु किंवा कथा भवति उच्छृङ्खलपु  
 तल्य कथा विभवत् भवति आदौ अन्त-य  
 भाष्येण कालान्त्य द्यमाना लूचनान्दलान्दपेण  
 उपलब्धा भवति परन्तु कथा कवि कल्पना —  
 जड्या भवति तल्य-य कथानामाख्यायिका वत्  
 विभाजित न भवति । काव्य अद्वितीय कथना नुसारं  
 ह्ये चारितं यत्र आख्यायिका ग्रन्थाः तत्र कादम्बरी  
 कथा रूपेण भविष्यति अस्ति । अतः तल्य कथनमस्ति  
 यत् — आख्यायिका कथावत् प्रख्याते भवति अथवा  
 इतिहासिकं परन्तु कथा कवि कल्पना प्रभूता भवति ।  
 अतः द्वयोर्मध्ये अभेदः ।

पाश्चात्य साहित्ये प्रभावित अनेके विद्वान्  
 कथामन्त यत् कथा साहित्ये पाश्चात्यानां सम्पाद-  
 अस्ति । तेषां भारतीयः विद्वान् अथवा कथाकार-  
 कथा साहित्यस्य प्रोत्थनं लक्ष्यतः अभवन् ।  
 पाश्चात्य विद्वान् स्वकीये ग्रन्थे A History of  
Sanskrit Literature लिख्यते यत् वैदिक  
 कालात् — एव भारतीयानां जीवने अनेके कथा-  
 प्रचलित आसन् तानि कथानु, उद्भिन्त कथा  
 लोक कथा, काल्पित कथा अथवा पशु कथा  
 एतादृशाः प्रकाराः आसन् । वेदवेद अद्यापि लघु-  
 रूपेण पशु पक्षीणां लघुः कथाः न लभन्ते परन्तु  
 अनेकानु उपमानु अथा द्युपमानु लघुनिना लघु  
 काव्यमणानां वेद मन्त्राचारणस्य तुलना इत्यादिभूय  
 मिलति । हेतुना मध्ये विभिन्न जलचर पक्षीणां  
 मध्ये एतादृशाः लघुताः लभन्ते । महाभारत पशुपक्षीणां  
 अनेकाः लघुः कथाः उपलब्धाः भवन्ति न  
 केवलं शान्ति पर्वणि अपितु अन्य कर्पवर्णु अपि

या रही है जैसी कि 'राज' के बाद  
 उम्मीद की गई थी। 'राज' में जहां  
 वह तपस्वी के गायक हैं। जहाँ 'राज'



તા: કથા: દેશોપમાના: સન્તિ । અતઃ પ્રાક્ષણે પ્ર-થેષુ  
 ઉપાનિષત્સુ પુરાણેષુ મહાભારતે રામાયણે ચ કથા  
 નાહિત્યલ્પ પ્રચાર: પ્રસાર: લગ્ન-હાત: । તત્પર-ચાત-  
 -ત્વ લોક-પ્રવાલીતા-ના દાર-ના-નાગદાર-ણે અનેક-કથા-ના  
 નિર્દાનમभवत् । ભૌતિક જીવને ધાર્મિક જીવને  
 મનોર-હાનાલ્પે સુલ્ભા અનેકા: કથા: ઉપલब्ધા: સન્તિ  
 નીતિ કથા: તથા ચ લોક-કથા કલિ દ્વૈતે દ્વૈતે લગ્ન કથા  
 નાહિત્યલ્પ સ્ત: । નીતિ-કથાનુ અનેકા: કથા:  
 પ્ર-વાલીતા: સન્તિ તેષુ પચ્ચતન્ત્રમ્, હિતૈષદ્શામેતિ  
 નીતિ શ્રોત્રમ્ વતત્ । મહત્કથા મગ્ધરો વેતાલ  
 પચ્ચાવિશાલે ભરતનાગરે ભિદાનનદ્યાત્રિશિકા, શુકભારત:  
 કલ્પદ્રુમ: લોક-કથા મોહિતા: પ્રચ્યા: સન્તિ । અતઃ  
 ભગવે - ૨ પ્રાચીન કાલાતઃ અધ્યાવાધે પરિન્ત કથા -  
 નાહિત્ય: ન્યુનાધિકરૂપેભ્યુ નિર્વેણુ કાલેભ્યુ ઉપલબ્ધતે ભ

૧ પચ્ચતન્ત્રમ્

વિચારકાણાં મતાનુસારેણ નીતિ વિષયકલ્પ  
 કથા ગ્રન્થાલ્પ પચ્ચતન્ત્રાલ્પ ન કેવલે આરેલે આપેતુ  
 ભમાત વિશ્વે મહત્વપૂર્ણે ભ્યાનમાતિ । કાલ્ય  
 ગ્રન્થાલ્પ પ્રાસિદ્ધિ: અનેન કારણેનાપિ દુશ્ચયતે ચત્ત વિશ્વલ્પ  
 અનેકાનુ ભાષાનુ અલ્પ કથા ગ્રન્થાલ્પ અનુવાદ:  
 અમવત્ । કિમય નીતિ શાસ્ત્રાલ્પ મનોહર શિશુ-પ્રદ  
 ગ્રન્થોદાતિ । નામાનુસારેણ આદિમનુ ગ્રન્થ પચ્ચતન્ત્રાણે  
 સન્તિ । વિશ્વે દિશતાલ્પિકાનુ લેખકણાનુ અલ્પ  
 ગ્રન્થાલ્પ મિલન્તિ । યુનાનદેશે લેખનુ ભદેશે લેખનુ -  
 દેશે, જર્મન દેશે, ઇત્યાદિષુ દેશેષુ અયે ગ્રન્થ ભમાનલ્પ  
 દુશ્ચય દુશ્ચયતે પચ્ચતન્ત્ર - ૫ । પચ્ચતન્ત્રાલ્પ મૂલ-  
 પ્રતિ અધુનાપિ ઉપલબ્ધાં નાસ્તિ । અતઃ અલ્પ મૂલોદ્ધ-  
 રમલ્પ લગ્ન-વલ્પ નિશ્ચયાત્મક રૂપેણ વિવિચિત્  
 વચાયતુ ન શક્યતે । અનેકેષાં પ્રમાણાનામાધારેણ



पञ्चतन्त्राख्य रचना-कालः तृतीय शताब्दी इति  
 स्वीकृतं वाच्यते । पञ्चतन्त्रेषु विभिन्नानां  
 नीति लम्ब-धीना कथानामुल्लेखोऽस्ति । पञ्चतन्त्राख्य  
 रचयिता विष्णुशर्मा नामकः पाण्डित इति कथ्यते ।  
 कश्मीर प्रांतं दक्षिण भारत वा आरभ्य ग्रन्थाख्य  
 रचनां लघानमानात् । परलानां कथानां माध्यमेन  
 नीति विषयकान् ज्ञानान् अनुवर्धनमर्थं ग्रन्थाख्य  
 विशेषता अस्ति । कथ्यते यत् तानां नीति  
 विषयकानां माध्यमेन विष्णु-शर्माद्वारा तृपाख्य  
 मूखपुत्रा नीति-निपुणाः विद्यालम्पनानां च कृताः आसन् ।  
 पञ्चतन्त्राद्वारा न केवलं शिक्षा प्रदानं व्यवहारिक जीवन-  
 लोभाय उपलब्धिः भवति । अति तन्त्रे एकस्याः  
 कथायाः मध्ये अनेकाः कथाः अनुत्तरभूताः सन्ति ।  
 मित्र भेदः, मित्र लोभः, लोभ-विग्रह लब्ध्वा प्राणांश्च  
 तथा च अपारिहित कारकं सते सन्ति । मुख्य भागः ।  
 अतः कथा गद्येऽपि लिखिताः सन्ति । सूक्तयः पद्ये तथा  
 च अनेकेभ्यः ग्रन्थेभ्यः नीति-प्रदा, शिक्षा-प्रदा  
 श्लोकाऽपि पञ्चतन्त्रे संग्रहीताः सन्ति । अतः  
 कथा साहित्यस्य अनुपममुदाहरणं पञ्चतन्त्रम् ।  
 २. हितोपदेशः ।

आवधारितं  
 कृतम्

पञ्चतन्त्रावत् हितोपदेशः नामकः लघुग्रन्थः  
 गद्य साहित्ये उल्लेखनीयोऽस्ति । पञ्चतन्त्राख्य अनुकूलो  
 रचयिता अभि (लघु) ग्रन्थः पाण्डित नारायण द्वारा विरचितः  
 अस्ति । नारायण शर्मणः आकाशकात् दारुण-वन्दः  
 आनीतः । चतुर्दश शताब्द्यां हितोपदेशस्य रचना  
 पाण्डित्याय प्रोक्ता अभवत् । तदनुकारेण हितोपदेशः  
 तन्मात्रं पूर्वकालस्य रचना अस्ति । अतः ल  
 भाषायाः विद्वान् कीर्तयन् महाभाषाः नवम शताब्द्याः समाप्ति  
 एव आरभ्य ग्रन्थाख्य काले स्वीकृतः । हितोपदेशस्य

समाप्ति







लघुपुत्राण्य आगेषु कृत्वा अग्रे प्रवेशः कृतः ।  
 कतिपयानामिदं गतमास्ति शतं इमे रत्नानां अनेकेषां  
 लक्षणानां नाभूहिः प्रयत्नोऽस्ति । परन्तु नूतनानां  
 प्रमाणानामाधारणं श्रद्धापूर्वकं अल्पं रत्नमेव अस्ति ।  
 इदं नाटकं विशालाकारमास्ति । मुख्यकटिं चरित्र-  
 चित्रण प्रधाननाटकमास्ति । यद्यपि पात्राणामधिकता  
 अस्ति परन्तु कुत्रापि केनापि पत्रिणं लक्ष्म नाट्य-  
 कायेण अभ्यासः न कृतः । समाजस्य निषेधा वगाणां  
 प्रतिनिधित्वमास्ति । अस्माकं समाजो भूषणः  
 अधवा दोषा विद्यमाना सन्ति तेषां प्रतिबिम्बं वयं  
 आस्मिन् नाटके पश्यामः । अल्पं नाटकं पात्राणि  
 नगं विशेषणं प्रतिनिधित्वं कुर्वन्ति अपितु तेषां  
 पात्राणां व्यावृत्तगतत्वात् विद्यमाना अस्ति । आस्मिन्  
 नाटके प्रकृति चित्रणं तु नाममात्रमेव दृश्यते ।  
 दाशानक्य भावना नाटके पदे-२ दृश्यते ।

अल्पं नाटकस्य मुख्यं कथानकं यादृक्दलेन लक्ष-  
 वलन्तलेन च <sup>समय</sup> ~~समय~~ कालेन तस्मात् इदं दारमा प्रधानं  
 रूपकं रत्नं वयमास्मिन् नाटके लक्ष्मि रत्न  
 लक्षणस्य च दृष्टा विशेष रूपेण प्राप्नुमः । यद्यपि  
 नाटकस्य भाषा प्रकृता अस्ति तथापि अल्पं लक्ष्मि रत्न  
 जना इदं नाटकं निरलक्ष्म अवलोक्य शन-नाति ।

इति दारमा